RNI:UPHIN/2016/46009
RNP/SHN/18-2019-21

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
ब्रह्मज्ञान ही अमृत है।
सरसावा

तारतम मंजरी

वर्ष ५ अंक ३ मार्च २०२० बुद्धजी शाका ३४२ विक्रम सवंत २०७७ पृष्ठ संख्या ३२

ब्रह्मज्ञान ही अमृत है

प्रेम ही जीवन है

आध्यात्मिक उन्नति के आठ सूत्र

१. नियमित ध्यान
२. नियमित स्वाध्याय
३. सात्विक अल्पाहार
४. प्रबल पुरुषार्थ
५. परब्रह्म के प्रति समर्पण एवं गुरुजनों के कथनों के प्रति श्रद्धा
६. शिष्टाचार
७. दृढ़ संकल्प
८. अटूट आत्मविश्वास

स्वत्वाधिकारी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

नकुड रोड, सरसावा, जिला-सहारनपुर, उ.प्र.

Email : shriprannathgyanpeeth@ gmail.com Youtube: SPJIN Website: www. spjin.org

Twitter : @Raajan Swami Whats App: +917533876060

अनुक्रमणिका

1.	सम्पादकीय		1
2.	बीतक समीक्षा – 7 : गादीवाद : एक अभिशाप	कृष्ण कुमार कालड़ा	2
3.	पहले आप पेहेचानो रे साधो	लिंकन अग्रवाल	6
4.	संसार में परमात्मा कितने हैं ?	आचार्य सुभाष	10
5.	खेल त्यों त्यों होवे दूर	राहुल श्रीमाली	13
6.	स्वामी दयानन्द सरस्वती	आचार्य सुभाष	15
7.	इश्क बिना न पाइए नूर तजल्ला हक	ज्योति निजानन्दी	21
8.	खोज बड़ी संसार	शशि किरन	25
9.	नारी शक्ति	सावित्री गुरूंग	28

रसीद बुक हेतु आवश्यक सूचना

प्राणाधार श्री सुन्दरसाथ जी! जिन सुन्दरसाथ जी ने अप्रैल–2019 के वार्षिकोत्सव में सेवा एकट्ठा हेतु रसीद बुक ले गये थें।कृपा करके रसीद बुक 15 मार्च 2020 तक **speed post** से श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा भेजने की कृपा करें और रसीद से प्राप्त सेवा

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट बैंक
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

खाता संख्या– 3290805513
IFSC कोड – CBIN0282531

में सेवाराशि डालने के बाद कृपया इन नम्बरों पर अवश्य सूचित करें ।

कार्यालय – 7088120381
सचिव – श्री राजेन्द्र सिंह चौहान 9412016322

सदस्यता शुल्क

भारत में	विदेश में
वार्षिक 130 रू.	650 रू.
आजीवन 1200 रू.	.....

लेख में प्रगट किये गये विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इनके प्रति सम्पादक, प्रकाशक उत्तरदायी नहीं है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र सहारनपुर होगा।

प्रकाशन कार्यालय
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, नकुड़ रोड, जिला–सहारनपुर (उ.प्र.)
पिन कोड–247232 | सम्पर्क सूत्र – 9725389547, 7088120381
ई मेल : tartammanjari@gmail.com

Youtube:SPJIN
वेबसाईट :– www.spjin.org
ई मेल :– shriprannathgyanpeeth@gmail.co

सम्पादकीय

ज्ञान प्राप्ति करने के बाद प्रायः एक दोष उत्पन्न होता ही है, वह है अभिमान। यह दोष प्रायः सभी को उत्पन्न होता है। इस दोष से अपनी जान बचानी पड़ती है। जिसका कि उपाय है ईश्वर समर्पण। यदि कोई व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करके अथवा ऐसी ही और कोई सिद्धि प्राप्त करके ईश्वर समर्पण करता है, तभी वह अभिमान नामक दोष से बच पायेगा, अन्यथा नहीं। कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि जब ज्ञान प्राप्ति से अभिमान आता ही है, तो ज्ञान प्राप्त करें ही क्यों? बिना ज्ञान के ही सीधा सरल रहना ठीक है. परंतु हमारी दृष्टि में यह चिंतन उचित नहीं है। व्यवहारिक नहीं है। क्योंकि यदि किसी को अधिक भोजन खाने पर बदहजमी हो जाती है, तो क्या इसका उपाय यह किया जाए कि वह भोजन खाना ही छोड़ दे? अथवा संयम से खाए, यह करना उचित है? तो जैसे बदहजमी से बचने के लिए भोजन छोड़ देना उचित नहीं है, बल्कि संयम से भोजन खाना उचित है। इसी प्रकार से अभिमान से बचने के लिए ज्ञान प्राप्ति करना ही नहीं, यह उपाय उचित नहीं है। बल्कि ईश्वर समर्पण करना उचित है।

पहले ज्ञान अवश्य प्राप्त करें, फिर ईश्वर समर्पण भी अवश्य करें, जिससे नम्रता आएगी। ज्ञान प्राप्ति के बाद, यदि अभिमान उत्पन्न हो गया, और उसे दूर नहीं किया, तो वह ज्ञान विष के तुल्य हो जाएगा, और सबका विनाश करेगा। और ईश्वर समर्पण करने पर, यदि आपके जीवन में नम्रता आएगी, तो वह ज्ञान अमृत के समान आप सबका कल्याण करेगा।

– आचार्य सुभाष

* * *

25 मार्च 2020,बुधवार के दिन भारतीय नवसंवत्सर प्रारम्भ हो रहा है,साथ–साथ में बुद्ध जी शाका का 342 और विक्रम संवत 2077 वाँ वर्ष भी शुरू हो रहा हैं।अतः सभी भारतवासियों को भारतीय नवसंवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएं।

बीतक समीक्षा - ७

प्रस्तुति एवं प्रलेखन

कृष्ण कुमार कालड़ा, जयपुर

'तारतम मंजरी' के सितम्बर 2019 अंक से हमने पूज्य ***श्री राजन स्वामी*** *जी द्वारा वर्ष 2018 में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा में की गई बीतक चर्चा पर आधारित लेखों की एक श्रृंखला प्रारभ की है। इसमें प्रत्येक अंक में एक विशेष प्रसंग/घटनाक्रम का संक्षिप्त उल्लेख कर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जायेगा कि यह हमारे लिये क्यों महत्वपूर्ण है तथा इससे हमें क्या शिक्षा लेनी चाहिये। आशा है, पाठकों को यह श्रृंखला रुचिकर व उपयोगी लगेगी। आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।*

— संपादक

गादीवाद : एक अभिशाप

वि.सं. 1712 में सद्गुरु श्री देवचन्द्र जी के अर्न्तध्यान के पश्चात अधिकांश सुन्दरसाथ पुनः माया की ओर उन्मुख हो जाता है क्योंकि उन्हें सद्गुरु महाराज के तन के नाम तथा उनके द्वारा की द्वारा जाने वाली आड़िका लीला पर अधिक विश्वास था। चूंकि उस समय वाणी अवतरित नहीं हुई थी, अतः उन्हें मूल स्वरूप, आत्मा, परात्म और परमधाम का ज्ञान नहीं था। न ही उन्होंने सद्गुरु महाराज के धाम हृदय में आवेश स्वरूप से विराजमान श्री राज जी और उनसे अपने मूल सम्बन्ध को पहचाना था। वस्तुतः जब तक तारतम वाणी के प्रकाश में धनी से अखण्ड सम्बन्ध का बोध न हो, तब तक आडिका लीला की चकाचौंध में होने वाली मात्र श्रद्धा भावना को जागनी की संज्ञा नहीं दी जा सकती। यहीं कारण था कि सद्गुरु महाराज के अन्तर्ध्यान होते ही चर्चा–चितवनी पूर्णतः समाप्त हो गई और सभी सुन्दरसाथ पुनः माया में

रलमिल गये।

ऐसी स्थिति में बालबाई को यह चिंता सताने लगी कि यदि ऐसे ही चलता रहा तो धीरे–धीरे सद्गुरु श्री देवचन्द्र जी, जिनके अन्दर स्वयं अक्षरातीत ने आवेश–स्वरूप से विराजमान होकर लीला की है, की महिमा समाप्त हो जायेगी और जागनी कार्य को भी विराम लग जायेगा। परन्तु यह चिन्ता मात्र दिखावटी थी। वास्तव में वे श्री देवचन्द्र जी के पुत्र बिहारी जी को धार्मिक क्षेत्र का समस्त अधिकार व उत्तरदायित्व सौंपना चाहती थी। चूंकि उन्हें यह भी ज्ञात था कि सद्गुरु महाराज ने अपना तन त्यागने से पूर्व बाईस दिन श्री मिहिरराज को आध्यात्मिक ज्ञान की समस्त बातें बताकर स्पष्ट कर दिया था कि सुन्दरसाथ की जागनी उनके तन से ही होगी, अतः उन्होंने श्री मिहिरराज से औपचारिक रूप से इस विषय में विचार–विमर्श करना उचित समझा। दरअसल उन्हें पूर्ण विश्वास था कि श्री मिहिरराज इसके लिये कभी भी मना नहीं करेंगे। और हुआ भी यही। न केवल स्वयं श्री मिहिरराज इसके लिये तुरन्त तैयार हो गये बल्कि उन्होंने समस्त सुन्दरसाथ को भी मना लिया। फिर वि.सं. 1712 में आश्विन महीने में बिहारी जी का गादी अभिषेक किया गया तथा श्री मिहिरराज ने सर्वप्रथम उनके चरणों में प्रणाम किया। उस दिन से बिहारी जी महाराज गादी पर विराजमान होकर नियमित रूप से प्रातः और सांय चर्चा करने लगे। यह बात दूसरी है कि वे परमधाम की चर्चा के नाम पर मात्र लौकिक बातें ही सुनाया करते थे और इसमें सुन्दरसाथ को कोई रस भी नहीं आता था। बिहारी जी की चर्चा के पश्चात श्री मिहिरराज सुन्दरसाथ को परमधाम की चर्चा सुनाते थे जिसमें मूलतः युगल स्वरूप के शोभा शृंगार का ही उल्लेख होता था।

बीतक साहब का उक्त घटनाक्रम ही हमारे समाज में गादीवाद के प्रसार का प्रमुख आधार बना हुआ है जिसे इस प्रथा के समर्थक उसके समर्थन में सामान्यतः उद्धृत करते हैं। इसके साथ प्रायः यह भी तर्क दिया जाता है कि श्री मिहिरराज ने ही पहल की थी। परन्तु जैसा कि हमने पूर्व में स्पष्ट किया है कि श्री मिहिरराज ने ऐसा बालबाई के आग्रह पर शिष्टाचारवश एवं बिहारी जी को गुरु पुत्र मान कर किया था। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि श्री मिहिरराज गादी प्रथा के समर्थक थे और न ही सद्गुरु महाराज ने अपने धामगमन से पूर्व ऐसी कोई इच्छा प्रकट की थी क्योंकि वे जानते थे कि उनके पश्चात जागनी कार्य श्री मिहिरराज के तन से ही होना है।

वस्तुतः रूई और काठ की गादी में कोई दिव्य शक्ति नहीं होती। यदि ऐसा होता तो बिहारी जी ने गादी पर बैठने के पश्चात् क्यों नहीं परमधाम की चर्चा की? न उन्होंने स्वंय परमधाम देखा न किसी को दिखाया। गादी पर बैठने मात्र से यदि परमधाम के दर्शन हो जाय तो चितवनी की क्या आवश्यकता है? आज हमारे समाज में यही अंधविश्वास घर कर गया है कि जो गादी पर बैठ जाता है वह श्री राजजी का

ही स्वरूप है तथा अब तो उसकी पूजा–आरती भी होने लगी है। वर्तमान में सारी महिमा गादी की हो गई है तथा वाणी कहीं न कहीं गोण होती जा रही है। हर कोई गादी के पीछे भागा जा रहा है तथा उस पर बैठने के लिये विभिन्न प्रकार के व्यवहार कौशल तथा दक्ष प्रयोग किये जाने लगे हैं। याद रखिये, समाज में शोभा व प्रतिष्ठा लेने की भावना उसी में होती है जिसका व्यक्तित्व आध्यात्मिकता में नहीं रंगा होता। याद रखिये, गादी में न तो अक्षरातीत मिले हैं और न ही मिलेंगे, हमें उन्हें अपने धाम हृदय में ही खोजना होगा। जो समाज गादी पूजा को बढ़ावा देता है, उसे परमधाम का प्रकाश कैसे मिलेगा – यह विचारणीय विषय है।

आज हमारे समाज में दो विचारधारायें चल रही हैं– एक ब्रह्म वाणी के समर्थन में तथा दूसरी गादीवाद के समर्थन में। जहाँ ब्रह्म वाणी के समर्थक इसके कथन को श्री राजजी का कथन स्वीकार कर अंतिम सत्य मानते हैं, वहीं गादीवाद के समर्थकों का मत है कि जो गादीपति महाराज ने कह दिया, वही अन्तिम सत्य है। दूसरे शब्दों में, आज समाज में व्यक्ति विशेष एवं स्थान विशेष का महत्व अधिक हो गया है और श्री प्राणनाथ जी और उनकी वाणी को किनारे कर दिया गया है। यही नहीं, स्वंय को श्री प्राणनाथ जी और श्री देवचन्द्र जी के न केवल समकक्ष माना जाता है बल्कि कई बार तो उनसे विशिष्ठ भी माना जाता है इसी से समाज में भटकाव प्रारम्भ हो गया है तथा सुन्दरसाथ में परस्पर विभाजन रेखा खिंचती चली जा रही है। स्मरणीय हैकि जब तक हमारे हृदय में युगल–स्वरूप के चरण–कमल नहीं पड़ेगे, हमारी आत्मा जाग्रत नहीं हो सकती। सुन्दरसाथ की जमात में सभी सुन्दरसाथ हैं– हमें सभी को आत्मिक दृष्टि से देखना होगा। सुन्दरसाथ – अर्थात् जो सुन्दरबाई श्री श्यामा जी द्वारा लाये तारतम ज्ञान का अनुकरण करता है, चाहे वह कोई भी सृष्टि हो। ठीक है, यदि किसी के पास विद्वता आ गई और वे किसी स्थान के गादीपति महाराज बन गये तो उनका सम्मान कीजिये परन्तु राजजी की बैठक तो सबके हृदय में समान रूप से है, इसलिये कोई छोटा–बड़ा नहीं है।

यदि हम ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो पायेंगे कि विश्व में जितने भी पंथ आगे बढे हैं, उनके पीछे मुख्यतः भक्ति, ज्ञान और पुरूषार्थ ही रहा है।हमारे समाज में भी यदि वाणी को हटा दीजिये तो गादी मे कुछ नहीं रखा है। गादी प्रथा ने ही समाज को अकर्मण्य बना दिया है क्योंकि ऐसी मान्यता चल पड़ी है कि जो गादीपति महाराज नही कर सकते, वो कोई नहीं कर सकता। यही नहीं, इससे ब्रह्म ज्ञान का प्रचार–प्रसार भी रूक गया है क्योंकि व्यक्तिगत महिमा सर्वोच्च हो गई है। यही कारण है हमारे पास ब्रह्मवाणी की धरोहर होने के पश्चात् भी हम प्रगतिशील समाजों की श्रेणी में नहीं आ सके हैं।

न केवल गादीवाद, बल्कि स्थानवाद और जड़तावाद भी किसी समाज की आध्यात्मिक प्रगति में

बाधक हैं। यदि किसी समाज में सत्य को ग्रहण करने की प्रवृति नहीं है तथा उसमें व्यक्ति/स्थान विशेष को प्राथमिकता दी जाती है, तो उसमें भटकाव निश्चित है। आज हमारे समाज में ये तीनों विकृतियां घर कर गई है। चित्र, खड़ॉऊ एवं समाधि पूजा जड़ पूजा का ही रूप है। परमहंसो के चित्रों का सम्मान करने में कोई आपत्ति नहीं है परन्तु पूजा–आरती केवल श्री राज जी की वाणी की ही होनी चाहिये। इसी प्रकार, यदि किसी स्थान विशेष से ब्रह्मज्ञान का प्रसार हुआ है तो उसकी महत्ता है परन्तु उसे सर्वोच्च मानना कदापि उचित नहीं है। याद रखिये, आध्यात्मिक सम्पदा गादी पर बैठने मात्र से नहीं बल्कि त्याग, प्रेम, विरह, वैराग्य और समर्पण से प्राप्त होती है। जिनके पास इन गुणों का अभाव है, उन्हें चाहे कितने भी ऊँचे सिंहासन पर बिठा दीजिये, इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ने वाला।

अब वाणी का प्रकाश अवतरित हो चुका है, अतः छठे दिन की लीला में गादी का कोई महत्व नहीं रहा है। स्वंय महामति श्री प्राणनाथ जी ने अपने अर्न्तध्यान के पश्चात् गुम्मट जी में वाणी को पधराया था ताकि आने वाले समय में किसी प्रकार का संशय नहीं रहे। यह वाणी महामति जी के धाम ह्रदय में स्वंय अक्षरातीत श्री राज जी ने विराजमान होकर कही है–"श्री मुखवाणी धनिये कही, कहने की शोभा कालभूत को दई।" महामति जी ने भी स्वयं कहा है–"जिन कोई दियो महामति को दोष, ए वचन महामति से प्रकट न होए।" अर्थात् ये वचन न तो महामति के हैं, न ही इन्द्रावती के और न ही मिहिरराज के बल्कि मूल स्वरूप धाम धनी श्री राज जी के है। प्रत्येक प्रकरण के अंत में जो उनका नाम आता है वह छाप मात्र है। इसलिये कोई भी व्यक्ति कितना भी बड़ा ज्ञानी, प्रभावशाली और उच्च पदस्थ हो, उसके कथन को प्राथमिकता नहीं देनी चाहिये। याद रखिये, कोई भी समाज, संस्था या व्यक्ति तारतम वाणी से ऊपर नहीं हो सकता।

सार रूप में यही कहा जा सकता है कि हमारी शोभा श्री प्राणनाथ जी तथा उनकी वाणी से है। यदि हम संसार मे इनकी गरिमा बढ़ायेंगे तो हमारी गरिमा स्वतः ही बढ़ेगी –"पहले मोको सब जानसी, तब होसी तुम्हारी पहचान।" आप श्री प्राणनाथ जी की महिमा को जाहिर कीजिये, आप स्वंय जाहिर हो जायेंगे। आप केवल अपनी महिमा गाते रहेंगे तो कहीं के नहीं रहेंगे–"इन जिमी में साथ जी, जिन्होंने की सिरदारी, सो पुकार पुकार पछताये चलें जिन्हों जीत के बाजी हारी।" आप श्री प्राणनाथ जी की महिमा गाईये, दुनिया आपकी गायेगी–"जो मेरी सुध देओ ओर को तो चले तुम्हारा हुकम।"

अतः आज के परिप्रेक्ष्य में हमें समझना होगा कि हमारे लिये कौनसा मार्ग श्रेष्ठ है– गादीवाद का या ब्रह्मवाणी का।

पहले आप पेहेचानो रे साधो

लिंकन अग्रवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़

पहले आप पेहेचानो रे साधो,
पहले आप पेहेचानो।
बिन आप चिन्हें पारब्रह्म को
कौन कहे मैं जानो।।

साथ जी पहले आप पहिचानो का मतलब खुद की पहिचान अर्थात "मैं कौन हूं?" जो स्वयं से इस प्रश्न को नहीं पूछता है, उसके लिए ज्ञान के द्वार बंद ही रह जाते हैं। उस द्वार को खोलने की कुंजी यही है, स्वयं से पूछो कि "मैं कौन हूं?" इसके लिए सद्गुरु ने तारतम रूपी कुंजी भी हमे दी है, परन्तु इस कुंजी को उपयोग करने की क्षमता हमे विकसित करनी होगी। और जो सुंदर साथ दृढ़ता से और मनोयोग से पूछता है, वह स्वयं से ही उत्तर भी पा जाता है।

साथ जी "मैं कौन हूं?" इसका कोई उत्तर नहीं है। यह उत्तर के पार की बात है। हमारा मन बहुत सारे उत्तर देगा। हमारा मन कहेगा, तुम जीवन का सार हो। तुम अनंत आत्मा हो। तुम दिव्य हो, और इसी तरह के बहुत सारे उत्तर हमारे मन से मिलेंगे। साथ जी हमे अपने मन से मिले इन सभी उत्तरों को अस्वीकृत कर देना होगा है।

हमे नेति नेति कहना होगा अर्थात , "न तो यह, न ही वह।' जब हम उन सभी संभव उत्तरों को नकार देंगे , जो मन देता है ,सोचता है। फिर प्रश्न पूरी तरह से अनुत्तरीय बच जायेगा, फिर एक चमत्कार घटित होगा। अचानक प्रश्न भी समाप्त हो जायेगा । जब सभी उत्तर अस्वीकृत हो जाते हैं, प्रश्न को कोई सहारा नहीं बचता, खड़े होने के लिए भीतर कोई सहारा नहीं बचता। तो प्रश्न यह अचानक गिर पड़ताहै, यह समाप्त हो जाताहै, प्रश्न विदा हो जाता है।मन से प्रश्न विदा होने के बाद हमारा अंतर्मन इस प्रश्न पर विचार करने लगेगा। साथ जी मैं कौन हूँ ? एक ऐसा प्रश्न है जिसके उत्तर के बाद ही शुरू होती है इंसान की असली ज़िंदगी । तो फिर अभी तक जो ज़िन्दगी जी रहे हैं क्या वो इंसान की असली ज़िन्दगी नहीं है?

साथ जी बिल्कुल सीधी सी बात है कि अगर आपको कम्प्युटर की जानकारी नहीं है और आपको कम्प्युटर पकड़ा दिया जाए तो क्या आप कम्प्युटर को ठीक प्रकार से प्रयोग कर पायेंगे? नहीं । इसके लिए आपको कम्प्युटर की ठीक से जानकारी होनी

आवश्यक है। आपको पता होना चाहिए कि कम्प्युटर किसे कहते हैं और यह किस काम आता है। अगर कम्प्युटर जैसी श्रेष्ठ मशीन का प्रयोग सिर्फ फिल्म देखने के लिए किया जाए तो कम्प्युटर और टीवी में क्या अन्तर रह जाएगा ? ये कम्प्युटर का दुरुपयोग ही कहलाएगा। कारण सिर्फ अज्ञानता । किसी भी मशीन को ठीक से प्रयोग करने के लिए उस मशीन की ठीक से जानकारी होना जरूरी है। इसीलिए प्रत्येक मशीन के साथ उसका मैनुअल दिया जाता है जिसमें उस मशीन का परिचय और उसके प्रयोग करने कि विधि के साथ पूरा विवरण दिया जाता है ।

मनुष्य इस धरती का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है तो जरा सोचिए कि आखिर वह क्या चीज है जो सिर्फ मनुष्य के पास है और दूसरे प्राणीयों के पास नहीं है। क्या इंसान सिर्फ भय, निद्रा, आहार और मैथुन जैसे कामों को करने के लिए पैदा हुआ है ? नहीं ! क्योंकि ये काम तो जानवर भी करते हैं, फिर हम उनसे श्रेष्ठ कैसे ? हम कैसे कह सकते हैं कि हम मनुष्य का जीवन जी रहें हैं ? कारण है सिर्फ अज्ञानता। जब तक इंसान यह नहीं जानेगा कि वह कौन है, वह यह कैसे जानेगा कि उसे करना क्या है ? हैरानी की बात तो यह है यह विज्ञान जो प्रकर्ति के रहस्यों से पर्दा हटाने के प्रति इतना लालायित रहता है, इसने कभी इस सवाल का जवाब ढूंढने कि कोशिश नहीं की। जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सबसे महत्वपूर्ण सवाल यही है कि हर इंसान दुनिया कि तमाम दूसरी चीजों को जानने से पहले अपने बारे में जाने कि वह कौन है ?

हम अपने आपको शरीर समझते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि हम शरीर नहीं हैं बल्कि यह शरीर हमारा है और हम इस शरीर को चलाने वाले एक ड्राईवर हैं। हम और हमारा शरीर दोनों दो चीजें हैं। शरीर एक गाड़ी कि तरह है और हम इसके ड्राईवर हैं। जरा ध्यान दीजिये कि जीवित शरीर और मृत शरीर में क्या अन्तर होता है ?मेडिकल साइन्स के अनुसार दोनों में कोई अन्तर नहीं है क्योंकि निर्जीव शरीर में भी वे सारे तत्व मौजूद हैं जो कि एक जीवित शरीर में होते हैं। फिर वह कौन सी चीज है जिसके न रहने से वह निर्जीव हो गया है ?

वह है 'जीव' (रूह या Self)

जीव जब तक इस शरीर में रहता है तब तक यह जीवित कहलाता है, और जब इस शरीर को छोड़कर चला जाता है तो यह शरीर निर्जीव कहलाने लगता है। सजीव अर्थात् जीव सहित और निर्जीव अर्थात् जीव रहित । जीव इस शरीर को चलाने का काम करता है हम जीव हैं। गड़बड़ी तब शुरु होती है जब हम अपने हमको शरीर समझने लगते हैं। अगर हम शरीर हैं तो वह कौन है जो मरने के बाद इस शरीर को छोडकर चला जाता है ? वह कौन है जिसे सुख दुख का आभास होता है ?क्योंकि निर्जीव शरीर में तो कोई सुख दुख का आभास नहीं होता। अगर हम शरीर हैं तो " यह मेरा शरीर है " ऐसा कहने वाला कौन है ?

मैं और मेरा शरीर दोनों अलग अलग चीजें हैं। हम अगर किसी मकान में रहते हैं तो हम यह कहते हैं कि यह मेरा मकान है, यह नहीं कहते कि मैं मकान हूँ।

शरीर परिवर्तनशील है और लगातार बदलता रहता है। लेकिन हम वही रहते हैं। हमारा जो शरीर बचपन में था वह अब नहीं रहा लेकिन हम वही हैं।

बचपन में दूसरा शरीर था, जवानी में दूसरा शरीर है। और बुढापे में दूसरा शरीर होगा लेकिन हम वही रहेंगे। मेडिकल साइन्स के अनुसार भी प्रत्येक सात वर्ष में हमारा शरीर पूरी तरह से बदल जाता है। अर्थात शरीर की पुरानी समस्त कोशिकाएँ समाप्त होकर नई कोशिकाएँ बन जाती हैं। इस प्रकार एक ही जीवन में हम अनेक शरीर बदलते हैं लेकिन हम वही रहते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि हम शरीर नहीं हैं। बल्कि शरीर के अंदर रहने वाले हैं और यह शरीर हमको मिला है, जिससे कि हम अपने वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त कर सकें । अब प्रश्न यह उठता है कि हमारा वास्तविक लक्ष्य या असली मंजिल क्या है ?

हमारा अर्थात जीव का लक्ष्य कमाने खाने और भौतिक साधन जुटाने में लगे रहना नहीं है। कमाना खाना और तमाम भौतिक सुख साधन ये सब शरीर की जरूरत है, हमारी नहीं। क्योंकि हम हैं, इसलिए ये सब हमकी जरूरतें नहीं है।

जैसे हमको अगर पन्ना जी जाना है तो हमको उसके लिए एक गाड़ी दी जाती है। अब गाड़ी की जरूरत है ईंधन, इसलिए उसमें ईंधन डालना जरूरी है। लेकिन ईंधन हमारी जरूरत नहीं है। हमकी जरूरत या लक्ष्य है,पन्ना जी पहुँचना। अगर हम ईंधन को अपनी जरूरत मानकर पूरी जिंदगी ईंधन जुटाने में ही लगे रहेंगे तो कभी पन्ना जी नहीं पहुँच पायेंगे । इसी प्रकार जब हम अपने आपको शरीर मानकर, कमाने खाने को ही अपना लक्ष्य मानकर जिंदगी भर इन्ही कामों में लगे रहेंगे तो अपनी अर्थात जीव की मंजिल को कैसे प्राप्त करेंगे ? और जब मंजिल नहीं मिलेगी तो वह संतुष्टि और शांति कैसे मिलेगी जिसकी तलाश में हम भटक रहे हैं ?

अब बात करते हैं कि जीव की मंजिल क्या है ? उसकी जरूरतें क्या है ?

हमने कभी सोचा है कि हर इंसान बड़ाई साहेबी (supremacy) चाहता है। और हमेशा सुख में रहना चाहता है। हर व्यक्ति यह चाहता है, कि वह पूरी शक्ति के साथ हमेशा जीवित रहे, सदा सुखी रहे, श्रेष्ठ और उन्मुक्त जीवन जिये । संक्षेप में कहें तो हर व्यक्ति उन्मुक्तता (मुक्ति या फ्रीडम), अमरता और आनंद चाहता है।

वास्तव में यही जीव की मंजिल मुक्ति या फ्रीडम है। जीव उस अवस्था को पाना चाहता है जिसमें मृत्यु का भय न हो, उन्मुक्तता हो और आनंद हो। अब सवाल यह है कि जीव इस अवस्था को क्यों पाना

चाहता है? जीव इस अवस्था को इसलिए पाना चाहता है। क्योंकि हमारे भीतर जो आत्मा है ,वह सदा ही आनंद, निर्भय, मुक्त अवस्था में ही रही है। और जीव दुनिया में आने के बाद अपनी आत्मा का संग पाकर वह भी उसी मूल अवस्था को पाना चाहता है और उसे जब वह अवस्था नहीं मिलती है तो परेशान हो जाता है। और यह सारी गड़बड़ी तब पैदा हुई जब हम अपने हमको शरीर मानकर शरीर कि जरूरतों को पूरा करने में लग गए और अपनी (आत्मा) की जरूरत कि तरफ ध्यान ही नहीं दिया।

जबकि ये शरीर हमको इसलिए मिला था कि इसकी सहायता से हम अपनी मूल अवस्था को प्राप्त करें न कि इसलिए कि इस शरीर रूपी गाड़ी के लिए ईंधन जुटाने में ही पूरी जिंदगी बर्बाद कर दें।

जीव की वास्तविक मूल अवस्था को प्राप्त करने के लिए यह जानना जरूरी है कि उसको प्राप्त करने का तरीका क्या है ?बादलों से निकली हुई पानी की एक बूंद तब तक अपनी वास्तविक अवस्था में नहीं पहुँचेगी जब तक कि वह वापस सागर में जाकर न मिल जाए, क्योंकि बादलों का रूप लेने से पहले वह सागर में ही थी।

इसी प्रकार उस सर्वशक्तिमान अक्षरातित पूर्ण ब्रम्ह परमात्मा से अलग हुई यह परात्म तब तक अपनी मूल अवस्था को प्राप्त नहीं हो सकती जब तक वह वापस उस परमधाम में जागृत न हो जाए।

इस रूह को तब तक चौन नहीं मिल सकता जब तक कि वह अल्लाहतलाह में न समा जाए।

वास्तव में यह परात्मा उस आनंद स्वरूपा श्यामाजी की ही अंगना है और उस परमधाम में निवास करती है, जहाँ अमरता है, मृत्यु नहीं, उन्मुक्तता है कोई बंधन नहीं है और आनंद का सागर परमानंद है।

साथ जी जरा सोचिए उस आनंद स्वरूपा श्यामाजी की अंग अँगना होने के बावजूद भी ये कैसा जीवन जी रहे हैं हम, जहाँ एक पल के सुकून के लिए तरस गए। हम वहाँ आनंद के सागर में डुबकी लगा रहे थे और यहाँ एक पल के आनंद के लिए तरस रहे हैं। हम वहाँ अमरत्व को प्राप्त थे और यहाँ हर पल मृत्यु का भय सता रहा है। हम वहाँ पूरी तरह से मुक्त थे और यहाँ हर तरफ से बंधनों में जकड़े हुये हैं। ये कैसा जीवन है ? कारण सिर्फ यही है कि अपने को भूल गए और अपने को शरीर मान बैठे। हमारे अंदर supremacy की चाहत है, यह इस बात का प्रमाण है कि हम उस supreme का अंश हैं । हमारे अंदर मुक्त और अमर होने कि चाहत है, यह इस बात का प्रमाण है कि हम मुक्ति और अमरता प्रदान करने वाले उस सच्चिदानंद के अंश हैं। हमारे अंदर आनंद की चाहत है, यह इस बात का प्रमाण है हम आनंद के सागर उस सच्चिदानंद के अंश हैं।

संसार में परमात्मा कितने हैं ?

आचार्य सुभाष, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

जिसने इस सम्पूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड को बनाया, हम सब प्राणियों को इन शरीर आदि से युक्त कर जन्म दिया है, हम सब का पालन कर रहा है, हम सभी प्राणियों की व्यवस्था कर रहा है, सभी प्रकार के सुख के साधन हमें प्राप्त कराया है, हम जैसा कर्म करते हैं उसी के अनुसार हमें सुख–दुःख रूपी फल प्रदान करता है, उसी महान् सत्ता को लोग परमात्मा के नाम से जानते हैं।

संसार भर में अनेक प्रकार के मत–पन्थ–सम्प्रदाय बने हुए हैं केवल इसी परमात्मा के नाम से और हर सम्प्रदाय के अनुसार हर व्यक्ति की पृथक–पृथक मान्यता है इसी परमात्मा के विषय में कोई किसी को परमात्मा कहता है तो कोई किसी को भगवान् मान बैठा है। हर व्यक्ति के अन्दर यह मान्यता घूसी हुई है कि परमात्मा, भगवान् अथवा देवता बहुत अधिक हैं, हिन्दू मत में तो लगभग 33 कोटि देवता स्वीकार करते हैं। हमें तो लगता है कि लोगों को इतने भी कम पड रहे हैं इसीलिये हर गाँव, हर गली, हर घर में आज नए नए भगवान् उत्पन्न हो रहे हैं ।

यहाँ तक कि इसका लाभ उठाते हुए परमात्मा के प्रति इस आस्था या श्रद्धा का गलत फायदा उठाते हुए कुछ लोग साधू, गुरु, महात्मा, बन बैठे हैं और स्वयं को भी परमात्मा या भगवान् कहने में तनिक भी संकोच नहीं करते। कुछ लोगों की मान्यता है कि परमात्मा अनेक हैं क्योंकि अलग–अलग विषयों के अधिकारी व विशेष फल देने वाले होने से, जैसे कि इस संसार को बनाने वाला एक परमात्मा है ब्रह्मा, पालन करने वाला है विष्णु, सृष्टि का विनाश करने वाला पृथक है रूद्र या शिव, ज्ञान वा विद्या देने के लिए गणेश जी और सरस्वती देवी, बल देने के लिए हनुमान जी अथवा शक्ति कि देवी दुर्गा, धन–संपत्ति देने के लिए लक्ष्मी माता अथवा कुवेर भगवान् , कोई अनिष्ट न हो इसीलिए शनिदेव जी, सूर्यदेव, उत्तम–पति की प्राप्ति हेतु शिवजी, इत्यादि अनेक आवश्यकता के अनुसार, लोगों की अपनी–अपनी समस्याओं के समाधान हेतु अनेक भगवान् बना रखे हैं।

आज–कल लोगों की इच्छाओं की पूर्ति के लिए और भी नये नये भगवान् बनते जा रहे हैं, जैसे कि

गायत्री–माता, संतोषी–माता, वैष्णो देवी माता, श्री शिरडी साईं बाबा और पीर–बाबा इत्यादि ।

ठीक इसी प्रकार इसके विपरीत एक मान्यता या विचार और भी है, जो कि इस प्रकार प्रतिपादन करते हैं कि परमात्मा तो एक है परन्तु उसके नाम अनेक हैं। जैसे कि व्यक्ति एक होता है लेकिन उसको कई लोग अलग–अलग नामों से बुलाते हैं। अनेक व्यक्तिओं के साथ उसके सम्बन्ध अलग–अलग होते हैं और उसके व्यवहार भी उसके अनुसार होता है। कोई कहता है बेटा, कोई कहता है पति, कोई कहता है भाई, कोई कहता है पिता, कोई कहता है गुरु, परन्तु वह व्यक्ति एक ही होता है। ठीक इसी प्रकार परमात्मा को भी पृथक–पृथक नाम से कहा जाता है लेकिन वह परमात्मा होता एक ही है ।

जब भी किसी एक विषय में दोनों विपरीत विचार वा मत उपस्थित हो जाते हैं तो वहाँ संशय उत्पन्न हो जाता है कि दोनों में से सत्य पक्ष कौन सा है?यहाँ भी विषय एक ही है परमात्मा, और पक्ष दो हैं एकत्व और अनेकता। किसी भी बात को सिद्ध करना हो, संशय को दूर करना हो तो उसको सबसे पहले प्रमाणों की कसौटी पर परीक्षण करके देखना चाहिए। दोनों में से जो पक्ष सत्य सिद्ध हो, उसको ही स्वीकार करना चाहिए।

तो आइए शब्द–प्रमाण के आधार पर विचार करें कि परमात्मा एक है या अनेक। शब्द–प्रमाण में सर्वोत्तम है वेद और चारों वेद एक ही स्वर से यह कह रहे हैं कि परमात्मा केवल एक मात्र ही है। परमात्मा के अनेक गुण–कर्म–स्वभाव होने से तदनुसार उनको अनेक नामों से कहा जाता है। जैसे कि श्री प्राणनाथ जी की ब्रह्मवाणी और वेद में कहा है, –

पारब्रह्म तो पूरन एक हैं,
एक थे अनेक परमेश्वर कहावें।
अनेक पंथ सब जुदे जुदे,
और सब कोई शास्त्र बोलाये।।

धरे नाम खसम कसम के,
जुदे जुदे आप अनेक।
अनेक रंगे संगे ढंगे, विध विध खेलें विवेक।।

"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति अग्निं यमं मातारिश्वानमाहु" (ऋग.1.164.46) अर्थात् परमात्मा एक होता हुआ भी उसको विद्वान् लोग अग्नि, यम, मातरिश्वा आदि भिन्न–भिन्न नामों से पुकारते हैं ।

"एकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति" (ऋग.10.114.4) परमात्मा एक होता हुआ भी विद्वान अनेक प्रकार से उनका गुणगान करते हैं ।

"यो देवानां नामध एक एव.." (अथर्व. 2.1.3) ।

"एकं ज्योतिर्बहुधा विभाति" (अथर्व. 13.3.17) अर्थात् परमात्मा ज्योतिर्मय है, वह एक ज्योति ही नाना रूप में प्रकाशित हो रही है ।

ऐसे ही अनेकों मन्त्र हैं वेद में जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि परमात्मा केवल एक ही है। अथर्ववेद

में कहा है कि

"स एष एक एकवृदेक एव" (अथर्व. 13.4.12)। वह परमात्मा एक ही है वह एकवृत् है।

"न द्वितीयो न तृतीयो ...दशमो नाप्युच्यते (अथर्व. 13.4.16) वह परमात्मा न दो है, न तीन है, न चार है,... ..और न ही दश है, केवल एक ही है।

उपनिषद् में भी बताया गया है कि –

"एको वाशी सर्व भूतान्तरात्मा...." वही एक परमात्मा प्राणी–अप्राणी रूप जगत को अपने वश में किया हुआ है। तो यह शब्द प्रमाण से सिद्ध हो गया कि परमात्मा एक ही है । परमात्मा के गुण–कर्म–स्वभाव अनुसार उसके नाम बहुत सारे हैं हो जाते हैं जैसे कि अग्नि, मित्र, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, लक्ष्मी, सरस्वती, पिता, माता, गुरु इत्यादि।

अब हम अनुमान प्रमाण से जानने का प्रयत्न करेंगे कि परमात्मा एक है या अनेक। हम इस संसार को जब देखते हैं तो अनेक कार्यों में एक रूपता ही देखी जाती है। भारत के विभिन्न प्रान्तों में भ्रमण करके देखें अथवा विभिन्न देशों में जाकर भी देखें तो सभी मनुष्यों में, पशुओं में, पक्षियों में, वृक्ष–वनस्पतिओं में समानता पायी जाती है। इन सभी वस्तुओं की एक–रूपता को देखने के पश्चात् यह ज्ञात हो जाता है कि इन सबके पीछे एक ही बुद्धि काम कर रही है, इन सबको बनाने वाला भी एक ही है।

यदि पृथक–पृथक बनाने वाले होते तो उनकी रचना में भी पृथकता होती। यदि अनेक परमात्मा मानें तो एक–रूपता नहीं हो सकती क्योंकि हम संसार में देखते हैं कि अनेक मनुष्यों का विचार एक समय में एक जैसा नहीं होता बल्कि जिस प्रकार उनके विचारों में बहुत भिन्नता होती है वैसे ही उनके कार्यों में भी पृथकता देखी जाती है। इसी प्रकार विचारों में मत–भेद होने के कारण उन मनुष्यों में लड़ाई – झगड़ा भी बहुत बार देखे जाते हैं। यदि हम परमात्मा भी अनेक स्वीकार कर लेंगे तो उनके विचार भी अलग–अलग होंगे और विचार के अलग होने से उनके कार्य भी अलग होंगे।

फिर लौकिक राजाओं की भांति अनेक परमात्मा भी आपस में लड़ाई–झगड़ा करने में प्रवृत्त हो जायेंगे और संसार में एक जैसी व्यवस्था स्थायी रूप में नहीं रह सकती। जबकि पूरे विश्व में हम देखते हैं कि संसार की वस्तुओं में व व्यवस्थाओं में भी एक–रूपता बनी हुई है। इससे यह सिद्ध होता है कि इस समग्र विश्व–ब्रह्माण्ड को बनाने वाला परमात्मा एक ही है अनेक नहीं। परमात्मा की रचना के अन्तर्गत यह पृथिवी एक है, सूर्य भी एक है, चन्द्रमा एक है, ऐसे ही अग्नि, वायु, जल आदि के गुण व स्वरुप भी एक है। इन सबकी एक स्वरुपता से जान सकते हैं कि बनाने वाला परमात्मा भी एक ही है।अनेक नहीं।

खेल त्यों त्यों होवे दूर

राहुल श्रीमाली, झालोद, दाहोद, गुजरात

ज्यों ज्यों होवे अर्स नजीक,
खेल त्यों त्यों होवे दूर।
यों करते छुटया खेल नजरों,
तो रूहे कदमै तले हजूर।।

सिनगार–२४/१३

धामधनी के मुखारविंद रूप सिनगार ग्रन्थ के 'हकीकत मारफत का बेवरा' रूपी इस प्रकरण में हमे कहा जा रहा है कि 'ज्यों ज्यों होवे अर्स नजीक,खेल त्यों त्यों होवे दूर'..उपरोक्त चोपाई से यह तो समझ आ गया कि जैसे जैसे अर्स(परमधाम) नजीक होगा वैसे वैसे यह खेल यह माया हमसे छूट जाएगी.. पर उसके लिए तो जरूरी है कि पहले अर्स नजीक हो.!! अर्स कैसे नजीक होगा?? अर्स नजीक होने का अर्थ क्या निकालेंगे हम.... ??? इसी प्रकरण की आगे की सातवीं चोपाई में कह रहे है –'ऐ इल्म कहे खेल उड़ जावे,बका कंकरी के देखे' .. कि परमधाम की एक कंकरी भी अगर हमें यहाँ बैठे बैठे नजर आ जाए तो यह खेल हमारी नजरो से हट जाएगा... पर उस अर्स की कंकरी को अर्स को देखने की फुर्सत हमे कहाँ?

वाणी कहती है 'पच्चीस पक्ष छे आपणा, तेमा झीलजो रात दिन' .. जब तक हम अर्स के नजीक होने की राह पर ही चर्चनी चितवनि में आगे नहीं बढ़ेंगे तब तक कैसे अर्स नजीक होगा और खेल दूर होगा?? ..क्या हमने यही मान लिया है कि हम सिर्फ खेल देखने आए है?? और अगर ऐसा है तो उस वहदत के इश्क़ को कौन देखेगा,उसके रहस्यों की लज्जत कौन लेगा जिसके लिए भी यह खेल बना है(एक पातसाही अर्स की,और वहदत का इश्क़। सो देखलावने रुहो को,पहले दिल मे लिया हक।।)... हम आखिर इतनी वाणी पढ़ने और जानने के बाद भी क्यों समझ नहीं पा रहे है कि यहाँ 'सत चित और आनंद' तीनो की लीला हमे दिखाई जा रही है.. और उसका सुख उसकी लज्जत तभी हम यहाँ बैठे बैठे ले पाएंगे जब वह हमारे मूल तन की नजर इस खेल को जैसे देख रही है वैसे ही हमारी आत्मा की नजर मूल तनों और परमधाम को उसी तरह देखे 'परआतम ने आतम जोशे, त्यारे टलसे ते तिमिर घोर जी–प्र.गु.३०/४३.. इस खेल और परमधाम दोनों को देखना यही तो जागृति है.. जैसे जैसे अर्स नजीक होगा ,जैसे जैसे परमधाम दिखेगा वैसे वैसे आत्मा भी यहाँ की मैं को

छोड़ कर अपनी मूल परआतम की मैं को धारण करेगी.. और जिस खेल में वह अपने आपको लिप्त मान रही थी वहीं बाद में अपने आपको दृष्टा मानने लगेगी.. अर्स दिखेगा, मूल तन दिखेगा तभी तो यह चरण पूरा होगा कि–'माया गई पोताने घेर'... जब अर्स और धनी दिखाई देंगे तभी तो यह चरण पूरा होगा कि–'हम हकमें हक हममें, और हक बिना सब ख्वाब'... वे तन(परआतम) इस तन(आतम) को जैसे देख रहे है वैसे ही ,यह तन(आतम) उस तन(परआतम) को देखेंगे तभी तो– 'दोऊ तन तले कदम के,आतम परआतम' और 'पल पल माशूक देखना,एहि आहार आशिकन' इस चरण की सार्थकता सिद्ध होगी.. पर अर्स नजीक हो उसके लिए हम तड़पते ही कहां है?? तड़पा तो वह १६ साल का बालक था, तड़पे तो वे थे श्री मिहिरराज जी, लालदासजी, छत्रसाल जी, गांगजी भाई जी, केशवदास जी, कानजी भाई जी, ललिता सखी जी,शेख बदल जी ... हक बिना सब ख्वाब इसको तो ये पूर्ण करके गए.. 'मैं हक देखूं,हक देखे मुझे' इसको तो ये पूर्ण करके गए ... हम कब पूर्ण करेंगे?

'रूह के नैना खोल के, देखूं दोऊ गाल' आखिर इस चरण को हम क्यों पूर्ण करे?,हमे क्या लेना देना इस चरण से?? .. 'देखा पिया तेरा नूरी नजारा..','नूरी मुखड़े वाले मेरे धामधनी..' यह भजन जोर जोर से हम बड़े तान के साथ गा देते हैं, पर क्या कभी हमने सोचा है कि वह नूरी नजारा,वह नूरी मुखड़ा जो ४०० साल से देखा नहीं वह आज वाणी मिलने और समझ मे आने के बाद भी सामने क्यों नहीं है? आखिर कब हम यह समझेंगे की–'चितवन यूगल किशोर की,देत कदम नुरजमाल'.... या फिर बड़ीवृत का ही यह चरण कि–'कै सुख तिरछी चितवनि'...

हमें जो घण्टी, घड़ियाल, पकड़ाए गए है समाज की और से वह राह मोमिन की नहीं है.. रूहों ने वहां परमधाम में भक्ति का रब्द नहीं किया था,इश्क़ का रब्द किया था...सो हमे इश्क़ ही करना पड़ेगा ,हमे उस इश्क़ के दावे पर खरा उतरना है .. नाकि भक्ति की हरिफाई में उतरना है.. ...हम यह अवश्य समझे कि हम इश्क के सागर की लहर है तो हमे इश्क़ ही करना पड़ेगा..'जब आया इश्क़ सोहागी,मोहजल लेहरा भागी' जब यह होगा तभी तो खेल छूटेगा ..कहीं भी घण्टी घड़ियाल बजाने से धनी आजतक सामने नहीं आये है.. विरह के आंसुओं और चितवनि के जरिये ही वह दिल के तख्त पर बिराजमान हुए है.. और जब वे बिराजमान होंगे तभी यह चरण पूर्ण होगा कि–'हवे आव्यू धन अविनाशी'.. .. जिन्होंने भीड़ से दूर होकर अपने आपको चितवनि में डुबो दिया औऱ 'पडोशी पण न सुणे,यों आशिक छिपी रोए' यह अवस्था प्राप्त कर ली वास्तव में उन्होंने ही अर्स को अपने नजीक कर लिया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रस्तुति
आचार्य सुभाष, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

***

प्रस्तुत अंक से हम कुछ ऐसे महापुरूषों की जीवनी प्रकाशित करेंगें जिनका राष्ट्र के धार्मिक तथा सामजिक पुर्नरुत्थान में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आशा है, पाठकों को यह रुचिकर लगेगी। आपके सुझाव आमंत्रित है।

- सम्पादक

***

स्वामी दयानन्द सरस्वती जो कि आर्य समाज के संस्थापक के रूप में पूज्यनीय हैं. यह एक महान देशभक्त एवम मार्गदर्शक थे, जिन्होंने अपने कार्यो से समाज को नयी दिशा एवं उर्जा दी. महात्मा गाँधी जैसे कई वीर पुरुष स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों से प्रभावित थे. स्वामी जी का जन्म 12 फरवरी 1824 को हुआ. वे जाति से एक ब्राह्मण थे और इन्होने शब्द ब्राह्मण को अपने कर्मो से परिभाषित किया. ब्राह्मण वही होता हैं जो ज्ञान का उपासक हो और अज्ञानी को ज्ञान देने वाला दानी. स्वामी जी ने जीवन भर वेदों और उपनिषदों का पाठ किया और संसार के लोगो को उस ज्ञान से लाभान्वित किया. इन्होने मूर्ति पूजा को व्यर्थ बताया. ओम् में भगवान का अस्तित्व है, यह कहकर इन्होने वैदिक धर्म को सर्वश्रेष्ठ बताया। वर्ष 1875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की. 1857 की क्रांति में भी स्वामी जी ने अपना अमूल्य योगदान दिया. अंग्रेजी हुकूमत से जमकर लौहा लिया और उनके खिलाफ एक षड्यंत्र के चलते 30 अक्टूबर 1883 को उनकी मृत्यु हो गई।

स्वामी दयानंद सरस्वती वैदिक धर्म में विश्वास रखते थे. उन्होंने राष्ट्र में व्याप्त कुरीतियों एवम अन्धविश्वासो का सदैव विरोध किया. उन्होंने समाज को नयी दिशा एवम वैदिक ज्ञान का महत्व समझाया. इन्होने कर्म और कर्मो के फल को ही जीवन का मूल सिधांत बताया. यह एक महान विचारक थे, इन्होने अपने विचारों से समाज को धार्मिक आडम्बर से दूर

करने का प्रयास किया. यह एक महान देशभक्त थे, जिन्होंने स्वराज्य का संदेश दिया, जिसे बाद में बाल गंगाधर तिलक ने अपनाया और स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार हैं का नारा दिया. देश के कई महान सपूत स्वामी दयानंद सरस्वती जी के विचारों से प्रेरित थे और उनके दिखाये मार्ग पर चलकर ही उन सपूतों ने देश को आजादी दिलाई.

इनका प्रारम्भिक नाम मूलशंकर अंबाशंकर तिवारी था, इनका जन्म 12 फरवरी 1824 को टंकारा गुजरात में हुआ था. यह एक ब्राह्मण कूल से थे. पिता एक समृद्ध नौकरी पेशा व्यक्ति थे इसलिए परिवार में धन धान्य की कोई कमी ना थी।

1 जन्म नाम : मूलशंकर तिवारी

2 जन्म : 12 फरवरी 1824

3 माता पिता : अमृत बाई एवं अंबाशंकर तिवारी

4 शिक्षा : वैदिक ज्ञान

5 गुरु : विरजानन्द

6 कार्य : समाज सुधारक, एवं आर्य समाज के संस्थापक

एक घटना के बाद इनके जीवन में बदलाव आया और इन्होने 1846, 21 वर्ष की आयु में सन्यासी जीवन का चुनाव किया और अपने घर से विदा ली. उनमे जीवन सच को जानने की इच्छा प्रबल थी, जिस कारण उन्हें सांसारिक जीवन व्यर्थ दिखाई दे रहा था, इसलिए ही इन्होने अपने विवाह के प्रस्ताव को ना बोल दिया. इस विषय पर इनके और इनके पिता के मध्य कई विवाद भी हुए पर इनकी प्रबल इच्छा और दृढता के आगे इनके पिता को झुकना पड़ा. इनके इस व्यवहार से यह स्पष्ट था, कि इनमे विरोध करने एवम खुलकर अपने विचार व्यक्त करने की कला जन्म से ही निहित थी. इसी कारण ही इन्होने अंग्रेजी हुकूमत का कड़ा विरोध किया और देश को आर्य भाषा अर्थात हिंदी के प्रति जागरूक बनाया।

कैसे बदला स्वामी जी का जीवन ?

स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम मूलशंकर तिवारी था, यह एक साधारण व्यक्ति थे, जो सदैव पिता की बात का अनुसरण करते थे. जाति से ब्राह्मण होने के कारण परिवार सदैव धार्मिक अनुष्ठानों में लगा रहता था. एक बार महाशिवरात्रि के पर्व पर इनके पिता ने इनसे उपवास करके विधि विधान के साथ पूजा करने को कहा और साथ ही रात्रि जागरण व्रत का पालन करने कहा. पिता के निर्देशानुसार मूलशंकर ने व्रत का पालन किया, पूरा दिन उपवास किया और रात्रि जागरण के लिये वे शिव मंदिर में ही पालकी लगा कर बैठ गये. अर्धरात्रि में उन्होंने मंदिर में एक दृश्य देखा, जिसमे चूहों का झुण्ड भगवान की मूर्ति को घेरे हुए हैं और सारा प्रशाद खा रहे हैं. तब मूलशंकर जी के मन में प्रश्न उठा, यह भगवान की

मूर्ति वास्तव में एक पत्थर की शिला ही हैं, जो स्वयम की रक्षा नहीं कर सकती, उससे हम क्या अपेक्षा कर सकते हैं ? उस एक घटना ने मूलशंकर के जीवन में बहुत बड़ा प्रभाव डाला और उन्होंने आत्म ज्ञान की प्राप्ति के लिए अपना घर छोड़ दिया और स्वयं को ज्ञान के जरिये मूलशंकर तिवारी से महर्षि दयानंद सरस्वती बनाया.

1857 की क्रांति में योगदान

1846 में घर से निकलने के बाद उन्होंने सबसे पहले अंग्रेजो के खिलाफ बोलना प्रारम्भ किया, उन्होंने देश भ्रमण के दौरान यह पाया, कि लोगो में भी अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ आक्रोश हैं, बस उन्हें उचित मार्गदर्शन की जरुरत है, इसलिए उन्होंने लोगो को एकत्र करने का कार्य किया. उस समय के महान वीर भी स्वामी जी से प्रभावित थे, उन में तात्या टोपे, नाना साहेब पेशवा, हाजी मुल्ला खां, बाला साहब आदि थे, इन लोगो ने स्वामी जी के अनुसार कार्य किया. लोगो को जागरूक कर सभी को सन्देश वाहक बनाया गया, जिससे आपसी रिश्ते बने और एकजुटता आये. इस कार्य के लिये उन्होंने रोटी तथा कमल योजना भी बनाई और सभी को देश की आजादी के लिए जोड़ना प्रारम्भ किया. इन्होने सबसे पहले साधू संतो को जोड़ा, जिससे उनके माध्यम से जन साधारण को आजादी के लिए प्रेरित किया जा सके।

हालाँकि 1857 की क्रांति विफल रही, लेकिन स्वामी जी में निराशा के भाव नहीं थे, उन्होंने यह बात सभी को समझायी. उनका मानना था कई वर्षो की गुलामी एक संघर्ष से नही मिल सकती, इसके लिए अभी भी उतना ही समय लग सकता है, जितना अब तक गुलामी में काटा गया हैं. उन्होंने विश्वास दिलाया कि यह खुश होने का वक्त हैं, क्यूंकि आजादी की लड़ाई बड़े पैमाने पर शुरू हो गई हैं और आने वाले कल में देश आजाद हो कर रहेगा. उनके ऐसे विचारों ने लोगो के हौसलों को जगाये रखा. इस क्रांति के बाद स्वामी जी ने अपने गुरु विरजानंद के पास जाकर वैदिक ज्ञान की प्राप्ति का प्रारम्भ किया और देश में नये विचारों का संचार किया. अपने गुरु के मार्ग दर्शन पर ही स्वामी जी ने समाज उद्धार का कार्य किया।

जीवन में गुरु का महत्व

ज्ञान की चाह में ये स्वामि विरजानंद जी से मिले और उन्हें अपना गुरु बनाया. विरजानंद ने ही इन्हें वैदिक शास्त्रों का अध्ययन करवाया. इन्हें योग शास्त्र का ज्ञान दिया. विरजानंद जी से ज्ञान प्राप्ति के बाद जब स्वामी दयानंद जी ने इनसे गुरु दक्षिणा का पूछा, तब विरजानंद ने इन्हें समाज सुधार, समाज में व्याप्त कुरूतियों के खिलाफ कार्य करने, अंधविश्वास को मिटाने, वैदिक शास्त्र का महत्व लोगो तक पहुँचाने, परोपकार ही धर्म हैं, इसका महत्व सभी को समझाने जैसे कठिन संकल्पों में बाँधा और इसी संकल्प को अपनी गुरु दक्षिणा कहा।

गुरु से मार्गदर्शन मिलने के बाद स्वामी दयानंद सरस्वती ने समूचे राष्ट्र का भ्रमण प्रारम्भ किया और वैदिक शास्त्रों के ज्ञान का प्रचार प्रसार किया. उन्हें कई विपत्तियों का सामना करना पड़ा, अपमानित होना पड़ा, लेकिन उन्होंने कभी अपना मार्ग नहीं बदला. इन्होने सभी धर्मो के मूल ग्रन्थों का अध्ययन किया और उनमे व्याप्त बुराइयों का खुलकर विरोध किया. इनका विरोध ईसाई, मुस्लिम धर्म के अलावा सनातन धर्म से भी था. इन्होने वेदों में निहित ज्ञान को ही सर्वोपरि एवम प्रमाणित माना. अपने इन्ही मूल भाव के साथ इन्होने आर्य समाज की स्थापना की।

आर्य समाज स्थापना

वर्ष 1875 में इन्होने गुड़ी पड़वा के दिन मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की. आर्य समाज का मुख्य धर्म, मानव धर्म ही था. इन्होने परोपकार, मानव सेवा, कर्म एवं ज्ञान को मुख्य आधार बताया जिनका उद्देश्य मानसिक, शारीरिक एवम सामाजिक उन्नति था. ऐसे विचारों के साथ स्वामी जी ने आर्य समाज की नींव रखी, जिससे कई महान विद्वान प्रेरित हुए. कईयों ने स्वामी जी का विरोध किया, लेकिन इनके तार्किक ज्ञान के आगे कोई टिक ना सका. बड़े दृ बड़े विद्वानों, पंडितों को स्वामी जी के आगे सर झुकाना पड़ा. इसी तरह अंधविश्वास के अंधकार में वैदिक प्रकाश की अनुभूति सभी को होने लगी थी।

आर्य भाषा (हिंदी) का महत्व

वैदिक प्रचार के उद्देश्य से स्वामी जी देश के हर हिस्से में व्यख्यान देते थे, संस्कृत में प्रचंड होने के कारण इनकी शैली संस्कृत भाषा ही थी. बचपन से ही इन्होने संस्कृत भाषा को पढ़ना और समझना प्रारंभ कर दिया था, इसलिए वेदों को पढ़ने में इन्हें कोई परेशानी नहीं हुई. एक बार वे कलकत्ता गए और वहाँ केशव चन्द्र सेन से मिले. केशव जी भी स्वामी जी से प्रभावित थे, लेकिन उन्होंने स्वामी जी को एक परामर्श दिया कि वे अपना व्यख्यान संस्कृत में ना देकर आर्य भाषा अर्थात हिंदी में दे, जिससे विद्वानों के साथ– साथ साधारण मनुष्य तक भी उनके विचार आसानी ने पहुँच सके. तब वर्ष 1862 से स्वामी जी ने हिंदी में बोलना प्रारम्भ किया और हिंदी को देश की मातृभाषा बनाने का संकल्प लिया.हिंदी भाषा के बाद ही स्वामी जी को कई अनुयायी मिले, जिन्होंने उनके विचारों को अपनाया. आर्यसमाज का समर्थन सबसे अधिक पंजाब प्रान्त में किया गया।

समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध एवम एकता का पाठ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज के प्रति स्वयम को उत्तरदायी माना और इसलिए ही उसमे व्याप्त कुरीतियों एवम अंधविश्वासों के खिलाफ आवाज बुलंद की।

बाल विवाह विरोध

उस समय बाल विवाह की प्रथा सभी जगह

व्याप्त थी, सभी उसका अनुसरण सहर्ष करते थे. तब स्वामी जी ने शास्त्रों के माध्यम से लोगो को इस प्रथा के विरुद्ध जगाया. उन्होंने स्पष्ट किया कि शास्त्रों में उल्लेखित हैं, मनुष्य जीवन में अग्रिम 25 वर्ष ब्रम्हचर्य के है, उसके अनुसार बाल विवाह एक कुप्रथा हैं. उन्होंने कहा कि अगर बाल विवाह होता हैं, वो मनुष्य निर्बल बनता हैं और निर्बलता के कारण समय से पूर्व मृत्यु को प्राप्त होता हैं।

सती प्रथा विरोध

पति के साथ पत्नी को भी उसकी मृत्यु शैया पर अग्नि को समर्पित कर देने जैसी अमानवीय सति प्रथा का भी इन्होने विरोध किया और मनुष्य जाति को प्रेम आदर का भाव सिखाया. परोपकार का संदेश दिया।

विधवा पुनर्विवाह

देश में व्याप्त ऐसी बुराई जो आज भी देश का हिस्सा हैं. विधवा स्त्रियों का स्तर आज भी देश में संघर्षपूर्ण हैं. दयानन्द सरस्वती जी ने इस बात की बहुत निन्दा की और उस ज़माने में भी नारियों के सह सम्मान पुनर्विवाह के लिये अपना मत दिया और लोगो को इस ओर जागरूक किया।

एकता का संदेश

दयानन्द सरस्वती जी का एक स्वप्न था, जो आज तक अधुरा हैं , वे सभी धर्मों और उनके अनुयायी को एक ही ध्वज तले बैठा देखना चाहते थे. उनका मानना था आपसी लड़ाई का फायदा सदैव तीसरा लेता हैं, इसलिए इस भेद को दूर करना आवश्यक हैं. जिसके लिए उन्होंने कई सभाओं का नेतृत्व किया लेकिन वे हिन्दू, मुस्लिम एवं ईसाई धर्मों को एक माला में पिरो ना सके।

वर्ण भेद का विरोध

उन्होंने सदैव कहा शास्त्रों में वर्ण भेद शब्द नहीं, बल्कि वर्ण व्यवस्था शब्द हैं, जिसके अनुसार चारों वर्ण केवल समाज को सुचारू बनाने के अभिन्न अंग हैं, जिसमे कोई छोटा बड़ा नहीं अपितु सभी अमूल्य हैं. उन्होंने सभी वर्गों को समान अधिकार देने की बात रखी और वर्ण भेद का विरोध किया।

नारी शिक्षा एवम समानता

स्वामी जी ने सदैव नारी शक्ति का समर्थन किया. उनका मानना था, कि नारी शिक्षा ही समाज का विकास हैं. उन्होंने नारी को समाज का आधार कहा. उनका कहना था, जीवन के हर एक क्षेत्र में नारियों से विचार विमर्श आवश्यक हैं, जिसके लिये उनका शिक्षित होना जरुरी हैं।

स्वामी जी के खिलाफ षड़यंत्र

अंग्रेजी हुकूमत को स्वामी जी से भय सताने लगा था. स्वामी जी के वक्तव्य का देश पर गहरा प्रभाव था, जिसे वे अपनी हार के रूप में देख रहे थे, इसलिये उन्होंने स्वामी जी पर निरंतर निगरानी शुरू की. स्वामी जी ने कभी अंग्रेजी हुकूमत और उनके

ऑफिसर के सामने हार नहीं मानी थी, बल्कि उन्हें मुँह पर कटाक्ष की जिस कारण अंग्रेजी हुकूमत स्वामी जी के सामने स्वयम की शक्ति पर संदेह करने लगी और इस कारण उनकी हत्या के प्रयास करने लगी. कई बार स्वामी जी को जहर दिया गया, लेकिन स्वामी जी योग में पारंगत थे और इसलिए उन्हें कुछ नहीं हुआ।

अंतिम षड्यंत्र

1883 में स्वामी दयानन्द सरस्वती जोधपुर के महाराज के यहाँ गये. राजा यशवंत सिंह ने उनका बहुत आदर सत्कार किया. उनके कई व्यख्यान सुने. एक दिन जब राजा यशवंत एक नर्तकी नन्ही जान के साथ व्यस्त थे, तब स्वामी जी ने यह सब देखा और अपने स्पस्ट वादिता के कारण उन्होंने इसका विरोध किया और शांत स्वर में यशवंत सिंह को समझाया कि एक तरफ आप धर्म से जुड़ना चाहते हैं और दूसरी तरफ इस तरह की विलासिता से आलिंगन हैं, ऐसे में ज्ञान प्राप्ति असम्भव हैं. स्वामी जी की बातों का यशवंत सिंह पर गहरा असर हुआ और उन्होंने नन्ही जान से अपने रिश्ते खत्म किये. इस कारण नन्ही जान स्वामी जी से नाराज हो गई और उसने रसौईया के साथ मिलकर स्वामी जी के भोजन में कांच के टुकड़े मिला दिए, जिससे स्वामी जी का स्वास्थ बहुत ख़राब हो गया. उसी समय इलाज प्रारम्भ हुआ, लेकिन स्वामी जी को राहत नही मिली. रसौईया ने अपनी गलती स्वीकार कर माफ़ी मांगी. स्वामी जी ने उसे माफ़ कर दिया. उसके बाद उन्हें 26 अक्टूबर को अजमेर भेजा गया, लेकिन हालत में सुधार नहीं आया और उन्होंने 30 अक्टूबर 1883 में दुनियाँ से रुक्सत ले ली।

अपने 59 वर्ष के जीवन में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने राष्ट्र में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ लोगो को जगाया और अपने वैदिक ज्ञान से नवीन प्रकाश को देश में फैलाया. यह एक संत के रूप में शांत वाणी से गहरा कटाक्ष करने की शक्ति रखते थे और उनके इसी निर्भय स्वभाव ने देश में स्वराज का संचार किया।

आवश्यक सूचना

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा का **चौदहवां वार्षिकोत्सव,**
01 से 07 सितम्बर 2020 को मनाया जायेगा।

इश्क बिना न पाइए नूर तजल्ला हक

ज्योति निजानन्दी, सरसावा

प्यारे धनी के लाडले सुन्दरसाथ जी परमधाम में पूर्ण ब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत एवं उनकी लाडली ब्रह्मात्माएं हमेशा आनन्द की लीला में मग्न रहती थी वाहेदत के कारण सभी अपने अपने इश्क को बड़ा कहती थी इश्क के बल पर ही सभी ब्रह्मात्माएं कूदा करती थी यही इश्क रब्द सभी ब्रह्मसृश्टियों के इस ब्रह्माण्ड में आने का एक कारण भी बना।

एक पातसाही हक की और वाहेदत का इश्क।
सो देखलावने रूहों को पहले दिल में लिया हक।।

सुन्दरसाथ जी श्री कुलजम स्वरूप जो धाम धनी का वाङ्मय कलेवर है धाम धनी के ज्ञानमयी स्वरूप के चिन्तन, मनन, मन्थन के बाद तो सभी रूहें हक की पातसाही एवं परमधाम के इश्क के बारे में अच्छी तरह समझ ही गयी होंगी। वाणी में धाम धनी क्या कह रहे हैं

रब्द रूहों ने हक सो किया इश्क का जोय।
सो इश्क बिना इस अर्श में पैठ न सके कोय।।

परमधाम में रूहों ने राज जी से जो इश्क रब्द (प्यार भरी बहस) किया था जब तक उन रूहों में वह इश्क नहीं आता तब तक कोई भी रूह परमधाम में प्रवेश नहीं कर सकती। धाम धनी वाणी में कहते हैं

जब इश्क इनों आवसी तब देखेगी मुझको।
इश्क बिना इन अर्श में मै मिलूं नहीं इनको।।

यह तो स्पश्ट हो ही जाता है वाणी की विभिन्न चौपाइयों के द्वारा कि इश्क के बिना कोई भी रूह न तो अक्षरातीत के दीदार कर सकती है ना ही परमधाम के पच्चीस पक्षों मे विचरण कर सकती है परिक्रमा ग्रन्थ में परमधाम के पच्चीस पक्षों का वर्णन है पर शुरूआत के प्रकरण में ही धाम धनी महामती जी के द्वारा क्या कह रहे हैं

अब कहूं रे इश्क की बात
इश्क शब्दातीत साक्षात्।
जो कदी आवे मिने शब्द चौदह
तबक करे रदद्।।

इश्क और पूर्णब्रह्म परमात्मा एक ही है प्रेम और ब्रह्म दोउ एक है जिस आत्मा के धाम हृदय में परमधाम एवं परब्रह्म के प्रति इश्क आ जाता है उसके

लिए ब्रह्माण्ड का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता अध्यात्म के चरम शिखर पर पहुचने के पश्चात् भले ही पंच भौतिक तन इस संसार में रहता है किन्तु आत्मिक दृश्टि परमधाम एवं परब्रह्म के ध्यान में ही विचरण करती है परिक्रमा के तीसरे प्रकरण में कहा है

अब आओ रे इश्क भानू हाम
देखूं वतन अपना निज धाम।
करू चरण तले विश्राम विलसो पिया जी
सो प्रेम काम।।

श्री महामती जी की आत्मा कहती है कि हे इश्क अब तू मेरे दिल में आ जा जिस से मैं अपनी चाहना पूरी कर लूं मेरी यही इच्छा है कि मैं अपने मूल घर परमधाम को देख लूं अपने प्रियतम के चरण कमलों के दर्शन में ही आनन्द प्राप्त करती रहूं और इसी प्रकरण में आगे क्या कहा है

कई वाणी इश्के उपजी कई इस्के पड़ी पुकार।
ए रूहें भी वास्ते इश्क के हाय हाय
हुइया ना खबरदार।।

कई धर्म ग्रन्थों में इश्क अर्थात् प्रेम की महिमा के बारे में बताया है कबीर दास जी ने कहा है

पोथी पढ़ पढ़ जग भया भया न पण्डित कोय।
ढाई आखर प्रेम के पढ़े सो पण्डित होय।।

एक मात्र प्रेम के द्वारा ही परमात्मा को पाया जा सकता है धाम धनी अक्षरातीत कितने व्यथित शब्दों में अपने हृदय की वेदना को प्रकट कर रहे हैं

हाए हाए इश्क हक का, समझे नहीं मोमिन।
ना तो अरवाहें थी अर्स की,
पर दिल न हुआ रोशन।।

इश्क की महिमा जानने के बाद भी कि धाम धनी को इश्क के बिना नहीं पाया जा सकता पर परमधाम की रूहों के दिल में प्रकाश नहीं हुआ और वह उस इश्क को अब तक समझ ही नहीं पाई।

सुन्दरसाथ जी, जब हम पहली बार ब्रज में आए जिसे पूरी नींद कहा गया है फिर भी गोपियों के तन में जो ब्रह्मसृश्टियों की आत्मा थी उन्होंने इस भवसागर को गोपद वच्छ के समान माना वाणी में कहा भी है

तू बल कर कछु अपना, चल राह तामसियो सूर।
ब्रह्मसृश्टि निकसी ब्रज से, देखो क्यों कर पहुंची
चरणों हजूर।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में जिसे आधी नींद एवं आधी जाग्रति कहा गया है रास में थोड़ा से विरह हो जाने पर भी वृन्दावन को शमशान के समान कह दिया आज इस जागनी के ब्रह्माण्ड में वाणी के माध्यम से धाम धनी पल पल हमें सचेत कर रहे हैं फिर भी अगर हम जागते नहीं तो दोश हमारा है सिन्गार ग्रन्थ में अक्षरातीत इन्द्रावती जी के धाम हृदय में बैठकर क्या कह रहे हैं।

जो कदी इश्क आवे नहीं
तो मोमिन बैठे रहे क्यों कर।
अर्स हक से बेसक होए के
क्यों रहे अर्स विगर।।

धाम धनी अक्षरातीत ने हमें परमधाम व अपने विशय में बेशक इलम दिया है तो क्या रूहो को कुछ प्रयास नहीं करना चाहिए अगली चौपाई में कहा है

इश्क क्यों न उपजे रूहों करना सोई उद्यम।
राह सोई लीजिए जो आगू हादिए भरे कदम।।

सुन्दरसाथ जी बीतक के माध्यम से हम सभी सुन्दरसाथ जानते हैं जो राह हमारे हादी श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी ने चलकर दिखाई हम सभी सुन्दरसाथ उसी राह पर चलें तो इश्क क्यों नहीं उत्पन्न होगा परिक्रमा ग्रन्थ में धाम धनी सूरत इश्क पैदा होने की इस प्रकरण में कह रहे हैं

तुमको इश्क उपजावने करूं सो अब उपाय।

मै तुम्हारे अन्दर इश्क पैदा करने के अनेक उपाय करता हूं जब तक इश्क नहीं आता हमारी आत्मा कभी भी परमधाम के आनन्द का रस पान नहीं कर सकती हर सुन्दरसाथ चाहता है कि हमारे अन्दर इश्क आ जाए कोई भी अपना बुरा नहीं चाहता दुर्योधन भी कहता है

जानामि धर्मं न च मे प्रवृति जानामि
अधर्मं न च मे निवृति।

मै जानता हूँ धर्म क्या है मेरा मन उसमे लगता ही नही यह भी जानता हूँ अधर्म क्या है लेकिन अधर्म छोड़ने को मेरा मन ही नही करता उसी तरह से हम भी जानते हैं कि माया दुख का निधान है और धाम धनी सुख का निधान (खजाना) है पर दुख को छोड़ना सुख के निधान धाम धनी को पाना कोई नहीं चाहता कारण क्या है हमारे जीव के संस्कार ।

एक शराबी है शराब पीता है लेकिन जिस दिन वह शराब छोड़ देता है उसको शराब से घृणा हो जाती है वह शराब की तरफ देखना भी नहीं चाहता। उसी प्रकार माया भी शराब है। माया की शराब के नशें मे जीव न जाने कितने जन्मों से धुत चला आ रहा है जब ज्ञान का प्रकाश मिलता है प्रियतम के प्रेम की सुगन्धी की एक–झलक सी मिलती है तो वह सब कुछ छोड़कर उसमें डूब जाना चाहता है माया का विश माया के सारे हथियारों को नश्ट करने के लिए धाम धनी का प्रेम ब्रह्मास्त्र है।

संसार का प्राणी संसारिक द्रव्यों के पीछे भागता है। जिसने अनन्त ब्रह्माण्डों को बनाया है वह उसके दिल मे बसा है तो उससे ज्यादा आन्दमय कौन होगा धाम धनी कहते हैं कि मै माया के संसार मे बैठकर भी तुम्हारें अन्दर इश्क पैदा करना चाहता हूं तांकि यहीं बैठे–बैठे तुम परमधाम के पच्चीस पक्षों में विहार करो धाम धनी कहते हैं–

कोई आगे कोई पीछे अव्वल
इश्क लेसी सब कोय।
पहले इस्क जिन लिया सोई सोहागिन होय।।

धाम धनी कहते हैं सभी ब्रह्मसृश्टियों को चाहे आगे या आखिर में इश्क तो सब को मिलेगा जो पहले इश्क लेगी वही सोहागिन कहलाएगी।

जो लो इश्क न आइया, तो लो करो उपाय।
यो ही इश्क जोस आवसी,
पल में देसी पट उड़ाय।।

धनी का इश्क पाने के लिए चितवनी की राह बताई गई है पहले प्रेम का जोश प्राप्त होगा धनी के दीदार के रस में डूबने पर राज जी की मेहर से उनका इश्क प्राप्त हो सकता है चितवनी में डूबकर परब्रह्म की शोभा को हृदय में बसाना है

इन्द्रावती जी ने राज जी से कुछ नहीं मांगा
ना चाहूं मै बुजरकी ना चाहू खिताब खुदाय।
इश्क दीजे मोहे आपना मोहे याही सो मुद्दाय।।

कोई सुन्दरसाथ राज जी से हुक्म मागंता है कोई इलम मांगता है कोई जोश मांगता है क्या सुन्दरसाथ जी हम कभी आत्म जागृती के लिए पाठ रखते हैं क्या हम राज जी से राज जी को मांगते हैं?

राज जी हमें माया का कुछ नहीं चाहिए आप हमारे हृदय में बस जाओ जिस दिन यह भावना आ जाएगी धाम धनी हृदय में बसने में देर नहीं करेंगे।

जब चढ़े प्रेम के रस हुए धाम धनी बस।
इश्क जिन विध उपजे मैं देउं सोई जिनस।।

अक्षरातीत ने इश्क जिस प्रकार से उत्पन्न हो सभी उपाय बताए हैं। अक्षरातीत के दिल में प्रेम के अनन्त सागर हैं यदि आप अक्षरातीत को अपने अन्दर हृदय में बसा लेंगे तो आपके अन्दर भी इश्क के पूर के पूर बहने लगेगें।

यों तैयारी कीजियो आगू करनी है दौड़।
सब अंग इश्क लेय के निकसो ब्रह्माण्ड फोड़।।

लेखकों के लिए आवश्यक सूचना

सुन्दरसाथ के चरणों में विनम्र प्रार्थना है कि जो भी सुन्दरसाथ लिखने में कुशल,योग्य है। जो अपना भाव तारतम वाणी और शास्त्रों के माध्यम से दूसरों तक पहुंचाना चाहते हैं ऐसे सुन्दरसाथ अपना लेख ईमेल (E-mail) या वटसप (watsapp) के माध्यम से ज्ञानपीठ में भेजें। लेख भेजने की अन्तिम तीथि प्रत्येक महिने की 1 तारिख तक रहेगी। समय पर भेजे गये लेखों को ही उस महिने की पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।अन्यथा आगे आनेवाली महिनों में प्रकाशित की जायेगी।

लेख भेजने का नियम–
1–शुद्ध टाईप होनी चाहिए।
2–हस्तलिखित शुद्ध एवं स्पष्ट होना चाहिए।
3–टाईप किया गया लेख हो तो ओरजिनल कांपी होनी चाहिए।
4–डाक से ज्ञानपीठ के पते भर भेज सकते हैं।
5–हस्तलिखित लेख को PDF बनाकर ही भेजें, ताकि पढने में और टाईपिंग में असुविधा न हो।

तारतम मंजरी मासिक पत्रिका "लेख" प्रेषित हेतु एवं अन्य कोई भी असुविधा के लियें निम्नलिखित EMAIL और दूरभाष नम्बरों पर सम्पर्क करें।

tartammanjari@gmail.com

+9193141 93262 (जुनेजा बाबूजी)
+919725389547 (आचार्य सुभाष जी)

खोज बड़ी संसार

शशि किरन

किसी प्रसिद्ध लेखक और कवि ने कहा कि यह दुनियां स्वप्नलोक है ! यदि इस वाक्य को सच माना जाए तो सोचने वाली बात है कि ये स्वप्न कौन देख रहा है ?

किसकी प्रेरणा से देख रहा है ?यदि यह दुनियां स्वप्न है तो हम किसके स्वप्न में हैं ?यदि यह स्वप्नलोक का होना सत्य है तो स्वप्न के टूट जाने के बाद का सत्य क्या होगा ?

उपरोक्त सवालों के जवाब न होने के कारण हम केवल दुनियावी कर्मकांडो में घिर कर रह जाते हैं।

आज हर इंसान के सामने ऐसा वातावरण बना हुआ है कि वह केवल असन्तुष्टियों को शांत करने, अपनी जीविका पालन में ही लगा हुआ है । प्रत्येक जीव ईश्वर से उसे सदैव स्मरण रखने का वादा कर इस धरती पर आता है मगर आये थे हरि भजन को पर ओटन लगे कपास में ही अपने अंत को पहुँच जाता है । एक सच्चे गुरु और उसकी प्रेरणा के अभाव में जीवन वृथा ही बीत जाता है । तो अब सवाल यह उठता है कि वह ईश्वर कौन है और कैसे हम सच्चे सद्गुरु की खोज कर सकते हैं ?

इस सवाल का उत्तर देने से पूर्व मैं यह प्रश्न पूछना चाहती हूं कि क्या ईश्वर किसी विशेष धर्म का है? या धर्म केवल उस तक पहुँचने का मार्ग दिखलाता ?यदि सूक्ष्म ष्टि से देखा जाए तो धर्म का अर्थ होता है धारण करना,जब हम किसी विशेष धर्म को अपनाते हैं तो उससे जुड़े सभी रीति–रिवाज, रहनी–सहनी आदि को अपनाना पड़ता है, और धीरे धीरे हम ईश्वर की ओर से उन्मुख हो केवल उस धर्म विशेष से संबंध रखने वाले मनुष्य मात्र रह जाते हैं !

तो, क्या ईश्वर को पाने के लिए धर्म को त्यागना होगा ? बिल्कुल नहीं । हमे केवल चेष्टा करनी है और अपने भीतर ईश्वर को जानने की इच्छा जागृत करनी है । फिर इस इच्छा को संकल्प रूप में लेकर एक नए पथ पर चलना है जो केवल और केवल ईश्वर की ओर जाता है । इस कड़ी में हम सबसे पहले एक एक कर सभी धर्म ग्रन्थों पर गूढ़ चिंतन करेंगे और उन बातों पर गौर करेंगे जो उसके साकार वजूद को दर्शाते हैं ।

हिन्दू धर्म– हिंदुओं के ग्रन्थों में से सबसे पहले श्री ष्ण भगवान द्वारा कही गयी गीता को लेते हैं

।श्रीमदभागवद गीता के पंद्रहवे अध्याय में सोलहवाँ श्लोक है जिसमें श्रीष्ण अर्जुन को संबोधित करते हुए कहते हैं, हे अर्जुन ! मैं परमात्मा नहीं हूँ

द्वाविमौ पुरुषौ लोके, क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षर सर्वाणि भूतानि, कूटस्थोऽक्षर उच्यते ।।

उत्तम पुरुषस्त्वन्य परंमात्मेत्युदाहृतः।

अर्थात सर्वप्रथम है क्षर पुरुष, जो सदा बनता और मिटता रहता है । दूसरा है अक्षर पुरुष जो अखंड अनादि है करोड़ों ब्रह्मांडो को बनाता और मिटाता है । तीसरा पुरुष है उत्तम पुरुष केवल उसी को ही परमात्मा कहा जा सकता है ।

हिंदुओं के ग्रंथ गीता में तीन पुरुषों का वर्णन आया है क्षर पुरुष ,अक्षर पुरुष और तीसरा उत्तम पुरुष ठीक इसी तरह कुरान ए पाक में भी तीन पुरुषों का वर्णन आया है– ला इलाह और अल्लाह ।जिस तरह ला का अर्थ है मिट जाने वाला, इसी तरह क्षर का अर्थ मिट जाने वाला है , इलाह और अक्षर का अर्थ सत्य या अखण्ड या न मिटने वाला है ।

क्षर पुरुष के अंदर हिंदुओं के ग्रंथ तीन ही पुरुषों का वर्णन करते हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश ठीक यही तीनों नाम कुरआने पाक में भी आये हैं –मैकाइल,अजराइल,और अजाजील ! जहाँ कुरान में इन्हें फरिश्ते कहा गया है वहीं गीता में देव कहकर संबोधित किया है । इसका तात्पर्य यह है कि केवल भाषा बदली हुई है ! बात दोनों ने एक ही कही है ।

अब इन दोनों ग्रंथो की तरह ही बाइबल में भी तीन पुरुषों का वर्णन है : 'GOD' यह तीन अक्षरों से मिलकर बना है । पहला 'G' है जिसका अर्थ है 'GENERATOR' अर्थात पैदा करने वाला। दूसरा है 'O' जिसका अर्थ है 'OPERATOR' अर्थात चलाने वाला या पालन पोषण करने वाला। तीसरा अक्षर 'D' है जिसका अर्थ है 'DESTROYER' या DESTRUCTOR अर्थात मारने वाला या नाश करने वाला , हिन्दू और इस्लाम ग्रन्थों में तीन क्षर पुरुष कहे गए हैं। कुरआने पाक के अनुसार मैकाइल एवं हिंदुओं के अनुसार ब्रह्मा बनाने का कार्य करते हैं। दूसरे अजाजील हिंदुओं के अनुसार विष्णु हैं जो पालन पोषण का कार्य करते हैं! तीसरे हैं अजराइल या महेश अथवा शिव जो नाश करने या मिटाने का कार्य करते हैं। इस प्रकार बाइबल के 'GOD' का अर्थ हुआ क्षर या ला पुरुष। इस प्रकार तीनों धर्मों में एक ही बात कही गयी। तीनों ने पहले पुरुष के एक जैसे कार्य बताए हैं। इसी प्रकार दूसरे पुरुष को बाइबल ने CREATOR TRUTH कहा है जिसका अर्थ है सत्य पुरुष अथवा क्षर पुरुष को उत्पन्न करने वाला। तीसरा पुरुष SUPREME TRUTH GOD कहा गया है जो 'GOD' पुरुष एवं 'TRUTH' पुरुष से SUPREME है । वास्तव में वही परमात्मा है। कुरान–पाक के अनुसार मुसलमानों ने, धर्म ग्रंथों के अनुसार हिंदुओं ने, बाइबल के अनुसार ईसाइयों ने तीन पुरुषों का ही वर्णन किया। अंतर केवल भाषा! जिस बात को हिंदुओं ने संस्कृत में कहा वही बात मुसलमानों ने अरबी भाषा में कही और वही ईसाइयों ने हिब्रू या अंग्रेजी में।

अब बचा सिख धर्म ! तो आइए देखते हैं कि गुरु ग्रन्थ साहिब में क्या कहा गया है ? सिक्ख धर्म– श्री गुरुवाणी श्री गुरु ग्रन्थ साहेब में श्री गुरु नानक देव लिखते हैं –

क्षर से परे अक्षर से पारा,
वाहि पुरुष का करो विचारा।।
नानक एकौ सिमरिए, जनम मरन दुख जाए
दूजा काहे सिमरिए जनमिए और मर जाए।।

परम पुरुष का मैं हूँ दासा ,
देखन आयो जगत तमासा

(गुरु गोविंद सिंह जी, दसवें गुरु)

उपरोक्त गुरुवाणी की चौपाईयाँ भी तीन ही पुरुष का वर्णन कराती हैं ।यह तीन पुरुष जो नानक जी की वाणी में आये हैं वह हैं – क्षर, अक्षर तथा परम पुरुष । यहाँ भी क्षर पुरुष कहा है जिसका अर्थ मिट जाने वाला है, अक्षर पुरुष अर्थात सत्य या अखण्ड । तीसरा परम पुरुष जिसको ही वह परमात्मा का रूप कहते हैं कहते हुए कहा रहे हैं कि केवल यही परमात्मा है जिसके ध्यान से मनुष्य आवागमन अर्थात जन्म–मरण से मुक्त हो सकता है ,यदि इनके स्थान पर किसी और का ध्यान या पूजा की जाए तो मनुष्य जन्मता और मरता ही रहेगा !

उपरोक्त कथनों से यह स्पष्ट है कि केवल भाषाई अंतर के कारण सभी धर्मों में विलगता है किंतु परमात्मा एक ही है । वास्तव में सभी धर्म एक रास्ते के जैसे है जो अंततः एक परमात्मा को ही जाते हैं या दूसरे शब्दों में सभी धर्म अलग–अलग उंगलियों की भांति एक ही परमात्मा को इंगित करती हैं !

क्या अब भी आपको लगता है कि परमात्मा एक नहीं है ? और यदि परमात्मा एक है तो वह कौन है ?कहाँ है ?

(क्रमशः)

आवश्यक सूचना

प्राणाधार सुन्दरसाथ जी ! आप सभी को सूचित करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि श्री राजन स्वामी जी के सानिध्य में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा में होली के शुभ अवसर पर दिनांक ०६/०३/२०२० से १०/०३/२०२० तक पंचदिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। श्री राजश्यामा जी को अपने हृदय में बसाकर, उनकी प्रेम–लीला में अपने को डुबोना व उन लीलाओं का नित्य–प्रति आनंद लेना ही वास्तविक होली है। अतः आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि ध्यान शिविर में सादे वस्त्रों में आकर आत्मिक लाभ प्राप्त करें।

संपर्क सूत्रः – **राजेन्द्र सिंह चौहान** (सचिव), 94120 16322
कार्यालय : 70881 20381

नारी शक्ति

सावित्री गुरूंग, आत्म जागृति महिला मण्डल, शुक्लाई

हम जिस संसार में हैं वो द्वैतवाद का है। संसार के सभी क्षेत्र में द्वैतवाद ही दिखाई देता है। जैसे दिन–रात, जन्म–मृत्यु, दुःख–सुख, पुरूश–प्रकृति, आदि। नारी प्रकृति स्वरूप हैं। नारी के बिना संसार की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सृश्टि संरचना और परिचालन के लिए नारी और पुरूश के बीच समानता होना अति जरूरी है। एक के बिना दूसरा अधूरा है पुरूश की सफलता के पीछे नारी का हाथ होता है। गाड़ी दोनों तरफ पहिये के बिना चल नहीं सकती। घर संसार और समाज भी इसी तरह से चलते हैं। घर के एक तरफ का पहिया अगर पुरूश है तो दूसरी तरफ का पहिया नारी का है। पुरूश टायर है तो नारी टयूब है। नारी पुरूश की अर्न्तनिहित शक्ति है। गाड़ी की टयूब खराब हो जाये तो गाड़ी चल नहीं सकती। उसी तरह घर की नारी शक्ति ही न हो तो वो घर विकाश नहीं कर सकता। इसीलिए भारतीय संस्कृति में नारी को उच्च स्थान देवी का स्थान मिला है। पौराणिक इतिहास और धर्म ग्रन्थों में नारी को सम्मान और मर्यादा प्रदान करने की शिक्षा हैं। प्रभु भोलेनाथ शिवजी ने बड़े बड़े असुरों को संहार करने के लिए माता पार्वती को अनेकों अवतारों के रूप में आगे प्रस्तुत किया। ब्रह्माजी ने विद्या और संगीत के लिए सरस्वती को आगेवान किया। विश्णु भगवान ने संसार परिपालना के लिए लक्ष्मी जी को साथ में लिया और परब्रह्म परमात्मा श्री राज जी महाराज ने भी दुनिया में ब्रह्मज्ञान अवतरित करने के लिए इन्द्रावती को आगेवान किया। इससे यह पता चलता है कि नारी के सहयोग के बिना इस संसार में भगवान भी कुछ नहीं कर सकते।

पुरूश कठोर है तो नारी कोमल है जिस पुरूश में नारी की कोमलता का गुण आ जाये वो महान बन जाता है और जिस नारी में पुरूश के दृढ़ गुण आ जाये तो वो देवी बन जाती है। वैदिक युग में नारी की मर्यादा और सम्मान समाज में सर्वोपरि था। पुरूश वेदों के उपदेश मानकर एक पत्नि–व्रता धर्म का पालन करते थे। नारी भी एक पतिव्रता धर्म का पालन करती थी। लकिन जैसे जैसे सभ्यता का विकास और संस्कृति परिवर्तन होने लगी पुरूश प्रधानता बड़ने लगी नारी की शिक्षा और संस्कार घटती गयी। धीरे धीरे नारी भोग्य सामग्री के रूप में व्यवहारित होने लगी। इसका फल आज उसके भैतिकतावादी युग में स्पश्ट रूप से दिखाई देता है। चारों तरफ बलात्कार,

हिंसा, हत्या, क्रन्दन आज के समाचार की हेड लाईन है। जिस धर में नारी का सम्मान नहीं, जिस समाज में नारी की मर्यादा नहीं वो घर और समाज व्यभिचारी बन जाता है।

शिशु का पहला गुरू ही माता है। अगर माता शिक्षित और संस्कारित नहीं हो तो वो बच्चों को अच्छी शिक्षा और संस्कार नहीं दे सकती। नारी के ममता मयी और कोमल गुण को अच्छी शिक्षा और संस्कार से विकासित करने से इसका फल अति मीठा होता है। शिक्षित और संस्कारी नारी घर और समाज को विकासित करने में पुरूश से अधिक प्रभावशाली होती है नारी पुरूश के कन्धों से कन्धा मिलाकर घर–समाज को आगे बड़ाती है। इसीलिए बेटी को छोटी उम्र से ही अच्छी शिक्षा और संस्कार प्रदान करना अनिवार्य है। बेटी को पराया धन मानकर अवहेलित करना अन्धविस्वास और समाज के लिए घातक है।

नारी के कारण ही बड़ी बड़ी ऐतिहासिक घटना दुनियां में घटि हैं राम–रावण का युद्ध माहाभारत का युद्ध सभी के पीछे नारी थी। इसीलिए नारी को शक्तिहीन समझना मूर्खता है नारी अगर अशिक्षित व्यभिचारी, बदचलन हो जायें तो समाज में आग लग जाती है नारी आग भी लगा सकती है और बुझा भी सकती है नारी को आग के बदले शुद्ध शीतल जल बनना चाहिये तांकि वो घर समाज के विकार धो सके।

आज की नारी में ज्यादातर नारी के कोमल गुण के स्थान पर पुरूश के कठोर गुण का प्रवेश देखने में आता है इसके फल स्वरूप आज की नारी भले ही भौतिकवाद शिक्षा में आगे है पर स्वभाव कठोर वाली बन गयी। गलत खान पान मांस, मदिरा, ड्रगस्, धूम्रपान और अन्य नशीले पदार्थों का सेवन आज की दुनीयां में पुरूश और नारी में प्रायः समानता दिखाई देती है। इसके कारण समाज में व्यभिचार फैलता गया।

नारी धर्म और संस्कृत की वाहक है। नारी से ही समाज में धर्म और संस्कृति बहती है जूठा बर्तन का अमृत भी जूठा होता है इसे कोई भी पान नहीं करेगा। इसीलिए आज के जमाने में नारी को जागृत करना जरूरी हो गया है उसको आयना देखना जरूरी है उसके ममतामयी आनन्द और कोमलता की सुगन्ध को ब्रह्मज्ञान से संस्कारित कर प्रकाशित करना जरूरी है भले नारी बड़ी बड़ी डिग्री वाली हो परन्तु शुद्ध आध्यात्मवाद के बिना अच्छी तरह से संस्कारित नहीं होगी सोने को कंचन बनाने के लिए सोल्हा बार तपाना पड़ता है इसी तरह नारी को भी ब्रह्मज्ञान के शुद्ध आध्यात्मवाद से विकारों को धोना पड़ेगा।

ब्रह्मज्ञान के माध्यम से नारी को चारों तरफ से जागृत करने के लिए सर्व भारतीय पर्याय में आत्म जागृति महिला मन्डल काम कर रही है।

सदस्यता फार्म

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित **''तारतम मंजरी''** हिन्दी मासिक पत्रिका के सदस्य बनें।

कार्यालय– श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, नकुड़ रोड़, सरसावा

जिला– सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत 247232

मोबाईल न.– 7088120381 (कार्यालय) 8650851010,9725389547,9314193262

email- tartammanjari@gmail.com shri, prannathgyanpeeth@gmail.com

महोदय,

मैं ''तारतम मंजरी'' का वार्षिक/आजीवन शुल्क रु. ..... नकद/ मनी ऑडर/ बैंक ड्राफ्ट/ पे – इन – स्लिप ..... दिनांक .....

अंतर्गत अदा कर रहा हूँ।

अतः मुझे हर माह तारतम मंजरी निम्न पते पर भेजें।

नाम ..... पिता/पति का नाम .....

पता .....

..... राज्य ..... पिनकोड़ .....

फोन ..... व्हाट्सएप न. ..... e-mail .....

(विशेष नियम)

(1) सदस्यता शुल्कः वार्शिक 130/–, आजीवन 1200/–

(2) ड्रफ्ट ''तारतम मंजरी'' के नाम सरसावा, सहारनपुर में देय होना चाहिये।

(3) कृपया अपना नाम व पूरा पता स्पश्ट रूप से भरें।

(4) सदस्यता शुल्क ''साहित्य खाता'' (श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, ट्रस्ट) के खाता संख्या 1335000100118751@IFS CODE- PUNB0133500 (पंजाब नेशनल बैंक, सलेम्पुर(सहारनपुर)उ.प्र. में जमा करा सकते हैं।

सम्पादक

निर्माणाधीन गौशाला

प्राणाधार सुन्दरसाथ जी! सादर प्रणाम जी! श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी ज्ञानपीठवासियों, विद्यार्थियों, आचार्यों एवं आगुन्तक अतिथियों में निशुल्क किया जाता है। आप सभी सुन्दरसाथ एवं उदारमना दानदाताओं से श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, रहने के लिए उत्तम व्यवस्था हो, उसके लिए आधुनिक ढ़ंग से गौशाला का निर्माण कार्य होने जा रहा है, इसके लिए जो भी सज्जन एवं सुन्दरसाथ दान देना चाहें ज्ञानपीठ उनका स्वागत करता है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं, और आप आने में असमर्थ हैं तो कृपया ज्ञानपीठ के खाते पर राशि जमा करके सूचित कर सकते हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपके द्वारा दिया गया दान गौवों के संवर्धन में ही लगाया जायेगा। धन्यवाद।

विनम्र निवेदन

धाम धनी के लाडले सुन्दरसाथ जी! वर्तमान समय में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा में शिक्षण, साहित्यिक एवं निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। जिन सुन्दरसाथ ने इन कार्यों के लिए अपनी सेवाएं लिखवायी है या स्वतः उनके मन में सेवा करने की इच्छा है, कृपया वे इन खातों में धनराशि भेजने का कष्ट करें। इस बात का ध्यान रखा जाय कि जिस सेवा की धनराशि भेजी जा रही है, मात्र उसी खाते की C.B.S.A/C संख्या में भेजें।

प्रणाम जी

सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया

1. खाता धारक का नाम–श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रष्ट
   खाता संख्या–3290805513
2. खाता धारक का नाम–श्री ज्ञानपीठ प्रकाशन
   खाता संख्या– 3290804553

पता–शाखा–सरसावा, सहारनपुर उ. प्र. 247232

MICR-Code - 247016005
IFSC CODE-CBIN0282531

सामान्य खाता संख्या
1335000100111916
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

साहित्य खाता संख्या
1335000100118751
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

भवन निमार्ण खाता संख्या
34971188767
भारतीय स्टैट बैंक
(11439) सरसावा, सहारनपुर
उत्तरप्रदेश, पिन- 247232
IFS CODE- SBIN0011439

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से प्रकाशित साहित्यों की सूची

क्र. स.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य	क्र. स.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य
1.	श्री कुलजम स्वरूप (मूल)	700.00	36.	बोध मंजरी (नेपाली)	15.00
2.	श्री बीतक साहेब टीका	400.00	37.	बोध मंजरी (उड़िया)	15.00
3.	श्री रास टीका	150.00	38.	शाश्वत सत्य की ओर	15.00
4.	श्री प्रकाश टीका	300.00	39.	सत्य को बाटो (नेपाली)	15.00
5.	श्री कलश टीका	225.00	40.	संसार से परमधाम की ओर	20.00
6.	श्री खटरूती टीका	80.00	41.	श्री प्राणनाथ महिमा	20.00
7.	श्री किरन्तन टीका (हिन्दी)	300.00	42.	श्री ब्रह्मवाणी चर्चा	65.00
8.	श्री किरन्तन टीका (अंग्रेजी)	350.00	43.	निजानन्द संस्कार पद्धति	15.00
9.	श्री किरन्तन टीका (नेपाली)	300.00	44.	सेवा पूजा	30.00
10.	श्री खुलासा टीका	250.00	45.	मूल स्वरूप की ओर	80.00
11.	श्री सनंध टीका (अप्रकाशित)		46.	चितवनी	5.00
12.	श्री खिलवत टीका	180.00	47.	आर्ष ज्योति	120.00
13.	श्री परिक्रमा टीका	275.00	48.	तारतम के निर्झर	70.00
14.	श्री सागर टीका	170.00	49.	तारतम पीयूषम्	70.00
15.	श्री सिनगार टीका	300.00	50.	हमारी शाश्वत सम्पदा	60.00
16.	श्री सिन्धी टीका	150.00	51.	खाद्य परिशीलन	250.00
17.	श्री मारफत सागर टीका (अप्रकाशित)		52.	विनाश का प्रर्याय मांसाहार	60.00
18.	श्री क्यामत नामा टीका (अप्रकाशित)		53.	विराट नक्शा (केलेण्डर रूप में)	50.00
19.	श्री मुखवाणी संगीत	150.00	54.	सौवं क्यामतनामा	90.00
20.	विद्वददमनी	200.00	55.	अनमोल मोती	5.00
21.	पट दर्शन	200.00	56.	सागर के मोती	10.00
22.	धाम सुषमा	60.00	57.	नित्य पाठ	5.00
23.	जागो और जगाओ	100.00	58.	ये स्वर्णिम पल	10.00
24.	दोपहर का सूरज	60.00	59.	मुख्तार हिन्द	20.00
25.	प्रेम का चाँद	65.00	60.	शब–ए–मेयराज	15.00
26.	निजानन्द योग	60.00	61.	अफलातूनी इलम	20.00
27.	हमारी रहनी	50.00	62.	बुलन्द मुकदमा	40.00
28.	ब्रह्माण्ड रहस्य	40.00	63.	झूठ ही झूठ	60.00
29.	श्री मद्भागवत यथार्थम्	30.00	64.	यथार्थ दीपिका	30.00
30.	ध्यान की पुष्पांजली	70.00	65.	प्रश्नमाला	5.00
31.	कड़वे सच	50.00	66.	निजानन्द चित्रकथा	30.00
32.	तमस के पार (बड़ी)	40.00	67.	शेख जी मीर जी का बयान	20.00
33.	तमस के पार (छोटी)	20.00	68.	फरमान	30.00
34.	तमस के पार (पंजाबी)	40.00	69.	स्वास्थ्य के प्रहरी	30.00
35.	बोध मंजरी (हिन्दी)	15.00	70.	सत्यांजलि	40.00

सुभाषित वचन

- हम धर्म *को* मानते हैं पर धर्म *की* नहीं मानते ।
- भक्ति के बिना ज्ञान अंहकार को जन्म देता है जबकि ज्ञान का बिना भक्ति अंधविश्वास को जन्म देती है।
- सत्य सदैव तीन चरणों से गुजरता है - उपहास, विरोध और अन्ततः स्वीकृति।
- मन के अनुकूल हो तो धनी की कृपा और मन के विपरित हो तो धनी की इच्छा, इस तथ्य को यदि जीवन में स्वीकार करेंगे तो आनन्द ही आनन्द है।
- हमारी नीयत से ईश्वर प्रसन्न होते हैं, और दिखावे से इंसान ... यह हम पर निर्भर करता है कि, हम किसे प्रसन्न करना चाहते हैं।
- प्रकृति ने हमारे शरीर की रचना कुछ इस प्रकार की है कि ना तो हम अपनी पीठ थपथपा सकते हैं, और ना ही स्वयं को लात मार सकते हैं । इसलिए हमारे जीवन में मित्र और आलोचक होना जरुरी है ।।

BOOK POST

RNI:UPHIN/2016/46009
RNP/SHN/18-2019-21

प्रकाशक
पू.श्री राजन स्वामी जी

प्रकाशन कार्यालय
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, नकुड़ रोड, जिला–सहारनपुर (उ.प्र.)
पिन कोड–247232

सम्पादक
श्री एस. पी. आर्य
भूतपूर्व आई. ए. एस.

तारतम मंजरी पत्रिका के स्वामी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट, सरसावा
जिला–सहारनपूर, दूरभाष – 7088120381
अवतरित न होने पर कृपया इस पते पर लौटाये।
धन्यवाद

सेवा में,